04 - क्या होगी ट्रम्प के टोटकों की परिणिति?

05 - व्यक्तित्व और सक्षम नागरिक के लिए पुस्तकें जरूरी

A Daily News Magazine

इंदौर

बुधवार, 23 अप्रैल, 2025

06 - विजय न्याय के प्रकल्पों से खंडेलवाल परिवार द्वारा की जा...

07 - संजीवनी या एक चक्रव्यूह का आमंत्रण?

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 190, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

तमिलनाडु से क्यों उठ रही है अधिक स्वायत्तता की मांग?

मीनू जैन

तमिलनाडु में केंद्र सरकार की नीतियों के खिलाफ़ स्वर तेज़ हो रहे हैं और राज्य अधिक स्वायत्तता की मांग कर रहा है। तमिलनाडु में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाने की जिद के चलते सत्तारूढ़ पार्टी डीएमके की स्टालिन सरकार ने राज्य के लिए अधिक स्वायत्तता की मांग सामने रख दी है। मुख्यमंत्री स्टालिन का तर्क है कि केंद्र सरकार की टकरावादी नीतियाँ भारत के संघीय ढाँचे को ख़तरे में डाल रही हैं। इसी के मद्देनज़र उन्होंने अधिक स्वायत्तता की मांग को राष्ट्रीय मुद्दे के रूप में प्रस्तुत किया है, जो न केवल तमिलनाडु बल्कि सभी राज्यों की व्यापक संघीय चिंताओं को रेखांकित करती है। इसका उद्देश्य तमिलनाडु सहित सभी राज्यों के अधिकारों की रक्षा करना है।

राज्यों के लिए अधिक स्वायत्तता से स्टालिन का अभिप्राय भारत के संघीय ढांचे के भीतर रहकर राज्यों के अधिकार क्षेत्र में वृद्धि से है, नीतिगत और प्रशासनिक मामलों में केंद्र के अनावश्यक हस्तक्षेप और राज्यपाल के मनमाने आचरण की सीमाएँ तय करने से है। मुख्यमंत्री स्टालिन का मानना है कि राज्यों को अधिक स्वायत्तता भारत के संघीय ढाँचे को मज़बूत करती है, जिससे केंद्र व राज्यों के मध्य अधिकारों और वित्तीय संसाधनों का समान वितरण और स्थानान्तरण सुनिश्चित होता है।

देश के संविधान में केंद्र एवं राज्यों के मध्य विधायी, प्रशासनिक और आर्थिक शक्तियों का स्पष्ट बंटवारा किया गया है। संविधान के अनुच्छेद 245 से लेकर अनुच्छेद 293 तक इसका विस्तार से वर्णन है। संघीय सूची में 97 विषय हैं, जिन पर केवल केंद्र सरकार क़ानून बना सकती है, राज्य सूची में 65 विषयों पर केवल राज्य सरकारें और समवर्ती सूची यानी के 52 विषयों पर केंद्र और राज्य दोनों क़ानून बना सकते हैं। विवाद की स्थिति में केंद्र सरकार के क़ानून को मान्यता मिलेगी। इनसे इतर यदि कोई नया विषय आता है तो उस पर कानून बनाने का अधिकार केंद्र सरकार को है। आपातकाल की परिस्थिति में तीनों सूचियों में मौजूद सभी विषय केंद्र के अधीन आ जाते हैं। स्टालिन द्वारा नियुक्त स्वायत्तता समिति को उन विषयों को वापस राज्य सूची में लाने की सिफारिश का भी काम सौंपा गया है, जो पहले राज्य सरकारों के अधीन आते थे लेकिन अब उन्हें समवर्ती सूची में रख दिया गया है जिस पर केंद्र और राज्य दोनों उन पर कानून बना सकते। शिक्षा एक ऐसा ही विषय है राज्य सूची से हटाकर समवर्ती सूची में डाल दिया गया है। उन्होंने राज्य के अधिकारों की रक्षा, अधिक स्वायत्तता और केंद्र-राज्य के रिश्तों को बेहतर बनाने हेतु सिफारिशें देने के लिए 15 अप्रैल, 2025 को एक उच्च स्तरीय तीन सदस्यीय समिति के गठन की घोषणा कर दी है जो देश की एकता व अखंडता और संविधान द्वारा स्थापित संघवादी ढांचे की परिधि के भीतर रहते हुए उन सभी संवैधानिक प्रावधानों, क़ानूनों, आदेशों, नीतियों का अध्ययन करेगी जो केंद्र और राज्यों के संबंधों को प्रभावित करते हैं। समिति विशेष रूप से पड़ताल करेगी कि वित्तीय संसाधनों, टैक्सेशन, शिक्षा आदि विषयों पर केंद्र के मज़बूत शिकंजे को ढीला करके राज्यों का हिस्सा कैसे बढ़ाया जाए। यह समिति अपनी अंतरिम रिपोर्ट जनवरी 2026 तक और अंतिम रिपोर्ट 2028 तक पेश करेगी। इस विशेष समिति की अध्यक्षता सर्वोच्च न्यायलय के रिटायर्ड न्यायाधीश कुरियन जोसेफ़ करेंगे। पूर्व आईएएस अधिकारी अशोक वरदान शेट्टी और तमिलनाडु राज्य योजना आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष प्रोफेसर एम. नागनाथन इसके सदस्य होंगे।

राज्यों को अधिक स्वायत्तता के मुद्दे पर तमिलनाडु की दोनों प्रमुख द्रविड़ पार्टियां - डीएमके और एआईएडीएमके ऐतिहासिक रूप से एकमत रही हैं। यही कारण है कि स्टालिन द्वारा अधिक स्वायत्तता की मांग उठाए जाने के तुरंत बाद एआईएडीएमके ने भाजपा के साथ गठबंधन से खुद को अलग कर लिया।

दरअसल, अधिक स्वायत्तता की यह मांग लम्बे समय से चली आ रही प्रशासनिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक शिकायतों और केंद्र व राज्य के मध्य चल रहे तनावपूर्ण संबंधों के फलस्वरूप उत्पन्न हुई है। उसका मूल कारण हैङ्क भाजपा का अति हिंदीवाद और हिन्दू राष्ट्रवादी एजेंडा, जो द्रविड़ आन्दोलन की धर्मनिरपेक्ष, सामजिक न्याय और सर्व समावेशिता की भावना के साथ सीधे टकराता है।

केंद्र सरकार द्वारा वित्तीय और प्रशासनिक अतिक्रमण टकराव की एक बड़ी वजह बना हुआ है। मुख्यमंत्री स्टालिन ने केंद्र सरकार पर राज्य के अधिकार क्षेत्र में अतिक्रमण करने का आरोप लगाया है। जीएसटी के कारण राज्य को हो रही राजस्व की हानि के कारण सरकार अपनी जनकल्याणकारी योजनाओं को लागू नहीं कर पा रही है। ग़ौरतलब है कि देश कि जनसंख्या में मात्र 6 प्रतिशत होने के बावजूद दूसरे नंबर की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला यह राज्य जीडीपी में 10 प्रतिशत का योगदान करता है। उन्हें शिकायत है कि तमिलनाडु टैक्स के रूप में जो एक रुपया केन्द्र सरकार को देता है उसके बदले में उन्हें मात्र 29 पैसे वापस मिलते हैं जबकि बिहार जैसे राज्य को एक रुपए के बदले सात रुपए पन्द्रह पैसे मिलते हैं।

लोकसभा की सीटों के परिसीमन की आड़ में तमिलनाडु समेत दक्षिण के सभी पाँचों राज्यों की सीटें घटाने और उत्तर भारत के राज्यों की सीट संख्या में आने वाले भारी उछाल को लेकर तमिलनाडु में केंद्र सरकार के प्रति नाराज़गी और अविश्वास का जो वातावरण बना हुआ है, उसने भी अधिक स्वायत्तता की मांग को हवा दी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने के लिए समग्र शिक्षा अभियान के तहत करीब 2500 करोड़ रुपए की शिक्षा निधि को केंद्र द्वारा रोके जाने और हाल ही में राज्य पर हिंदी भाषा थोपने को लेकर केंद्र और राज्य के बीच जो लम्बी तकरार चली, उसने भी राज्य सरकार को सशंकित कर दिया।

डीएमके सरकार ने त्रिभाषा फ़ॉर्मूले को अपनी भाषाई और सांस्कृतिक अस्मिता पर हमले के रूप में देखा। भाषाई अस्मिता की यही वह प्रबल भावना है जिस पर सवार होकर तमिलनाडु के डीएमके, एआईएडीएमके जैसे क्षेत्रीय राजनीतिक दल बारी-बारी से सत्ता में आते रहते हैं। तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि के मनमाने व्यवहार से उपजी तनातनी ने अधिक स्वायत्तता की मांग को और बढ़ावा दिया। राज्यपाल की मनमानी से तंग आकर अंततः राज्य सरकार को सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाना पड़ा। माननीय सुप्रीम कोर्ट ने राज्य विधानसभा द्वारा पारित दस विधेयकों को मंजूरी देने में देरी करने के लिए राज्यपाल को फटकार लगाई। स्टालिन सरकार NEET के विरोध में है क्योंकि यह राज्य के पिछड़े और वंचित वर्गों के छात्रों के हितों को नुक़सान पहुँचाता है। अधिक स्वायत्तता की यह मांग तमिलनाडु के राजनीतिक परिदृश्य को नया आकार प्रदान कर सकती है। तमिल अस्मिता और अधिकारों के प्रति उनकी यह प्रतिबद्धता उनके मतदाता आधार को मजबूत कर सकती है।

(सत्य हिंदी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

आतंकी हमला, 26 पर्यटकों की मौत

● जम्मू-कश्मीर में आतंकियों ने नाम पूछकर किया हमला ● प्रशासन ने एक मौत की पुष्टि की, 20 घायल, सेना ने इलाका घेरा

हमले पर राष्ट्रपति मुर्मू, समेत कई राजनेताओं ने जताया दुख

श्रीनगर/पहलगाम (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में मंगलवार दोपहर को आतंकियों ने पर्यटकों पर फायरिंग कर दी। हमले में 26 टूरिस्ट की मौत हो गई। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक आतंकियों ने टूरिस्ट से नाम पूछा, इसके बाद उसके सिर में गोली मार दी और फायरिंग करते हुए भाग निकले। हमले की जिम्मेदारी लश्कर-ए-तैयबा ने ली है। मीडिया को एक अफसर ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि मरने वालों की संख्या ज्यादा भी हो सकती है। ऐसे में मरने वालों की संख्या बढ़ने की आशंका है। अधिकारियों के मुताबिक घटना बैसरन घाटी में हुई, इसमें 20 लोग घायल भी हुए हैं। इनमें कुछ स्थानीय भी हैं।

आतंकियों को बख्शा नहीं जाएगा : पीएम मोदी

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा- पहलगाम आतंकी हमले की कड़ी निंदा करता हूं। जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया है, उनके प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं। इस जघन्य कृत्य के पीछे जो लोग हैं, उन्हें बख्शा नहीं जाएगा। उनका नापाक मंसूबा कभी कामयाब नहीं होगा। आतंकवाद से लड़ने का हमारा संकल्प अडिग है और यह और भी मजबूत होगा।

श्रीनगर पहुँचे गृहमंत्री शाह, हाईलेवल बैठक की

हमले को लेकर पीएम नरेंद्र मोदी ने सऊदी अरब से गृह मंत्री अमित शाह से फोन पर बात की है। उन्होंने शाह से मौके पर जाने को कहा है। अमित शाह श्रीनगर पहुंच गए हैं औ अफसरों के साथ हाईलेवल बैठक कर रहे थें। इधर, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सेना प्रमुख उपेंद्र द्विवेदी से बातचीत करके हालातों की जानकारी ली। सुरक्षाबलों ने पहलगाम में हमले वाले इलाके को घेर रखा है। हेलिकॉप्टर के जरिए इलाके पर नजर रखी जा रही है। घायलों का अस्पताल में इलाज जारी है।

किसी को नहीं छोड़ेंगे-जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले से दुखी हूं। मेरी संवेदनाएं मृतकों के परिजनों के साथ हैं। इस जघन्य आतंकी हमले में शामिल लोगों को बख्शा नहीं जाएगा और हम अपराधियों पर कठोरतम कार्रवाई करेंगे। अमित शाह ने आगे लिखा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को घटना के बारे में जानकारी दी और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक की।

भगवान के लिए मेरे पति को बचा लो

पहलगाम में यह आतंकी हमला मशहूर बेताब वैली से 10 किमी दूर स्थित बैसरन वैली में उस वक्त हुआ जब टूरिस्ट का एक ग्रुप घास पर घुड़सवारी का आनंद ले रहा है। आतंकी हमले के बाद सामने आए वीडियो में इस बात की पुष्टि हुई है कि हथियारबंद हमलावरों ने नाम पूछकर गोली मारी। हमले के बाद सामने आए वीडियो में आतंकवादियों की क्रुरता बयां हुई है। महिला ने वीडियो में बताया है कि महिला ने बताया कि आतंकियों ने नाम पूछा और गोली मार दी। इसी वीडियो में एक और महिला बुरी तरह रो रही हैं और ये कह रही हैं कि भगवान के लिए मेरे पति को बचा लो। वीडियो में एक शख्स कहता है कि आप टेंशन मत लो, आप यहां पर रहो। ठीक है ठीक है हम बचा देंगे। मैं आ रहा हूं।

सुप्रभात

हमें पता है कि परचा बुरा नहीं आया
मगर तुम्हारा पढ़ाया हुआ नहीं आया
किसी के हाल पे हँसने गया था महफ़िल में
मगर मैं लौटके हँसता हुआ नहीं आया
मैं शर्मसार कि फिर देर हो गई मुझको
वो सोचता है कि अच्छा हुआ नहीं आया
तेरी तरह नहीं आसान वापसी मेरी
मैं रास्तों को समझता हुआ नहीं आया
हमारी चीख़ ने इक भीड़ तो इकट्ठा की
मगर हमारा पुकारा हुआ नहीं आया।

- शारिक कैफी

पीएम मोदी के स्वागत के लिए पहुंचा एफ-15 फाइटर जेट

● सऊदी अरब में घुसते ही मोदी की दिल छूने वाली खातिरदारी ● क्राउन प्रिंस ने भेजा एफ-15 विमान,पीएम की स्पेशल अगवानी

रियाद (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सऊदी अरब में जमीन पर उतरे नहीं थे कि क्राउन प्रिंस ने उनकी सुरक्षा के लिए अपने लड़ाकू विमान को भेज दिया। ये एक स्पेशल संकेत है। जिसके तहत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विमान को सऊदी हवाई क्षेत्र में रॉयल सऊदी वायु सेना के एफ 15 विमानों ने स्वागत किया है।

भारतीय विदेश मंत्रालय ने ट्वीट करते हुए प्रधानमंत्री मोदी के स्वागत में इसे स्पेशल जेस्चर बताया है। ट्वीट में कहा गया है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की राजकीय यात्रा के विशेष सम्मान के रूप में, उनके विमान को सऊदी हवाई क्षेत्र में प्रवेश करते ही रॉयल सऊदी वायु सेना द्वारा सुरक्षा प्रदान की गई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सऊदी अरब को भारत के सबसे मूल्यवान साझेदारों में से एक बताया है और इसे एक विश्वसनीय मित्र और सहयोगी करार देते हुए कहा, कि वर्तमान समय उनके संबंधों के लिए आशाजनक समय है। जिसमें 'असीमित संभावनाएं' हैं।

यूपीएससी में प्रयागराज की शक्ति दुबे बनीं टॉपर

● हर्षिता गोयल सेकेंड टॉपर, टॉप 5 में हैं 3 लड़कियां

नई दिल्ली (एजेंसी)। संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) 2024 का फाइनल रिजल्ट मंगलवार को आया चुका है। प्रयागराज की रहने वालीं शक्ति दुबे ने ऑल इंडिया टॉप किया है। दूसरे नंबर पर हर्षिता गोयल हैं। तीसरा स्थान डोंगरे अर्चित पराग का है। यूपीएससी की इस प्रतिष्ठित परीक्षा में हर साल देश भर से लाखों अभ्यर्थी हिस्सा लेते हैं। मुख्य परीक्षा में सफल होने वाले लगभग 2845 उम्मीदवारों को इंटरव्यू के लिए बुलाया गया था। शक्ति दुबे ने इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन करने के बाद बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी से बायोकैमेस्ट्री में एमएससी की है। 2018 में पोस्ट ग्रेजुएट होने के बाद शक्ति दुबे ने सिविल सेवा परीक्षाओं की तैयारी शुरू कर दी। सात सालों की 'तपस्या' के बाद उन्होंने यूपीएससी परीक्षा पास कर ली है। उनकी सफलता पर घरवालों की खुशी का ठिकाना नहीं है। शक्ति दुबे ने अपनी सफलता का श्रेय घरवालों को दिया है। शक्ति दुबे ने वैकल्पिक विषय के रूप में राजनीति विज्ञान और अंतर्राष्ट्रीय संबंध के साथ परीक्षा पास की है। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बायोकेमिस्ट्री में बीएससी किया है। नंबर 2 पर हर्षिता गोयल रही हैं। हर्षिता शाह मूल रूप से हरियाणा की हैं और कई वर्षों से गुजरात के वडोदरा में रह रही हैं। हर्षिता का जन्म हरियाणा में हुआ। इसके बाद परिवार गुजरात के वडोदरा आ गया। यहीं वो बड़ी हुईं। हर्षिता थैलेसीमिया और कैंसर से पीड़ित बच्चों के लिए अहमदाबाद के बीलीफ फाउंडेशन के साथ काम कर चुकी हैं।

संसद ही सुप्रीम,उससे ऊपर कुछ भी नहीं है

● उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ बोले-सांसद असली मालिक ● पहले कहा था-सुप्रीम कोर्ट सुपर संसद जैसे काम कर रही

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट के अधिकार क्षेत्र को लेकर चल रही बहस के बीच उप-राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने मंगलवार को कहा कि संसद ही सबसे ऊपर है। धनखड़ दिल्ली यूनिवर्सिटी में संविधान पर आयोजित प्रोग्राम में स्पीच दे रहे थे। धनखड़ ने कहा, संसद सर्वोच्च है और उसके ऊपर कोई नहीं हो सकता। सांसद ही असली मालिक हैं, वही तय करते हैं कि संविधान कैसा होगा। उनके ऊपर कोई और सत्ता नहीं हो सकती। इससे पहले 17 अप्रैल को धनखड़ ने कहा था कि सुप्रीम कोर्ट का काम ऐसा है, जैसे वो सुप्रीम संसद हो। धनखड़ का यह बयान तब आया है, जब सुप्रीम कोर्ट में भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के बयान का मामला पहुंचा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक में हुए महत्वपूर्ण निर्णय

कैलेण्डर बनाकर संभागवार होंगे सामूहिक विवाह/निकाह सम्मेलन, क्रियान्वयन के लिये संशोधनों को मंजूरी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में भोपाल में हुई कैबिनेट बैठक में कई निर्णय लिए गए। बैठक में तबादला नीति पर बड़ा फैसला हुआ। तय हुआ है कि प्रदेश में 1 से 30 मई तक तबादले होंगे। मुख्यमंत्री ने नीति तैयार करने के लिए निर्देश जारी कर दिए हैं। अगली कैबिनेट बैठक में तबादला नीति 2025 प्रस्तुत की जाएगी।

मंत्रि-परिषद द्वारा मुख्यमंत्री कन्या विवाह/निकाह योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिये संशोधनों को मंजूरी दी गई। योजना अंतर्गत कन्या तथा कन्या के अभिभावक गरीबी रेखा के नीचे जीवन निर्वाह करते हों, साथ ही इनका बी.पी.एल. पोर्टल पर सत्यापन अनिवार्य होगा। कन्या विवाह तथा निकाह सम्मेलन के लिये संभागवार वार्षिक चक्रीय रूप से कैलेण्डर जारी कर सामुहिक विवाह/निकाह कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा।

संभागवार जिलों मे आयोजित सामूहिक विवाह सम्मेलन में सम्मिलित विवाह जोड़ों की न्यूनतम संख्या 11 एवं अधिकतम 200 जोड़ों की निर्धारित की गयी है। योजना में सामूहिक विवाह/निकाह सम्मेलनों में प्राप्त आवेदनों की स्क्रूटनी पूर्व अनुसार निकाय स्तर पर की जायेगीं। पात्र/अपात्र एवं समग्र पोर्टल पर वर-वधू की आधार ई-केवायसी अनिवार्य होगा। सामूहिक विवाह कार्यक्रमों के लिये शासन की ओर से मिलने वाले आर्थिक लाभ को सार्थक बनाने का प्रयास करते हुये आयोजन में जन-प्रतिनिधियों एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं की भागीदारी सुनिश्चित कर समाज के संपन्न और सक्षम व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त किया जायेगा।

मुख्यमंत्री कन्या विवाह एवं निकाह योजना में प्रति कन्या राशि 55 हजार रूपये में से वधू को राशि रूपये 49 हजार का एकाउन्ट पेयी चेक और शेष 6 हजार रुपये सामूहिक विवाह समारोह आयोजन के लिए संबंधित निकाय को प्रदाय किया जायेगा। सहायता राशि रुपये 49 हजार डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डी.बी.टी.) के माध्यम से वधू के खाते में एवं शेष 6 हजार रूपये आयोजन की व्यवस्थाओं पर व्यय के लिए प्रदाय की जायेगी।

मंत्रि-परिषद द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 से 2027-28 के लिए नवीन योजना टाइगर रिजर्व के बफर क्षेत्रों के विकास के लिए 145 करोड़ रूपये की सैद्धांतिक स्वीकृति प्रदान की गयी। इस योजना में बफर क्षेत्रों में संवेदनशील क्षेत्रों में विभिन्न कार्य किए जाएंगे।

इस नवीन योजना में बफर क्षेत्रो में संवेदनशील क्षेत्रों में चेनलिंक फेसिंग का निर्माण किया जाएगा। वन्य प्राणियों की सुरक्षा एवं अग्नि सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। चारागाहों एवं जल स्त्रोतों का विकास किया जाएगा। वन्य प्राणियों का उपचार और स्वास्थ्य परीक्षण किया जाएगा। नागरिकों के कौशल उन्नयन के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

मुख्यमंत्री कल्याणी विवाह सहायता योजना के आवेदन की प्रक्रिया हुई ऑनलाइन

मुख्यमंत्री कल्याणी विवाह सहायता योजना के आवेदन प्रक्रिया को ऑनलाइन कर आसान बना दिया गया है। कल्याणी महिला (विधवा महिला) सामाजिक न्याय दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के विवाह पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन कर सकती है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 22°c न्यूनतम 16°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ बुधवार, 23 अप्रैल 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

अमृतपाल समर्थकों ने रची शाह पर हमले की साजिश

- कई नेताओं पर हमले का बनाया है प्लान! चैट से खुलासा

चंडीगढ़ (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, कांग्रेस सांसद रवनीत सिंह बिट्टू और शिअद नेता बिक्रम सिंह मजीठिया पर हमले की साजिश रचने के आरोप में पंजाब पुलिस ने मोगा से दो लोगों को गिरफ्तार किया है। इस साजिश का खुलासा एक व्हाट्सएप ग्रुप वारिस पंजाब डे टीम की लीक हुई चैट से हुआ है। यह व्हाट्सएप ग्रुप कथित तौर पर अमृतपाल सिंह के समर्थकों द्वारा चलाया जा रहा था, जो इस समय असम के डिब्रूगढ़ जेल में एनएसए के तहत बंद हैं। सोशल मीडिया पर लीक हुई चैट में अमित शाह, बिट्टू,

मजीठिया और तलवाड़ा जैसे नेताओं पर हमले की योजना का जिक्र था। ग्रुप में विदेशी फंडिंग, हथियारों की खरीद और भड़काऊ सामग्री के प्रचार जैसे संवेदनशील मुद्दों पर भी चर्चा हुई थी। पुलिस ने इस मामले में लखदीप सिंह सरदारगढ़ (बठिंडा), बलकार सिंह (खन्ना) और पवनीदीप सिंह (मोगा) को मुख्य साजिशकर्ताओं के रूप में चिन्हित किया है। वहीं, बलकार सिंह और पवनदीप सिंह को गिरफ्तार किया जा चुका है। मोगा के साइबर क्राइम थाने में आपराधिक एक्ट की कई धाराओं के तहत एफआईआर दर्ज की गई है। बिक्रम मजीठिया ने अमृतपाल के कथित ऑडियो क्लिप्स जारी किए हैं, जिसमें वो गैंगस्टरों से रिश्तों, लूट के माल और राजनैतिक साठगांठ की बात कर रहा है। मजीठिया ने एनआईए जांच की मांग की है और मुख्यमंत्री भगवंत मान पर चुप्पी साधने का आरोप लगाया है। सुरक्षा एजेंसियों ने लीक चैट को गंभीरता से लिया है।

10 करोड़ दे दो, वरना पिता की तरह मार डालेंगे!

- एनसीपी नेता जीशान सिद्दीकी को डी कंपनी से धमकी

मुंबइ (एजेंसी)। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के नेता और दिवंगत बाबा सिद्दीकी के बेटे जीशान सिद्दीकी ने दावा किया है कि उन्हें डी कंपनी से जान से मारने की धमकी मिली है। उन्होंने एएनआई से बातचीत में कहा कि धमकी देने वाले ने ईमेल के जरिए 10 करोड़ की फरौती मांगी। यह भी कहा कि वो हर 6 घंटे में ऐसे धमकी भरे ईमेल भेजेंगे। मुंबई

पुलिस के अनुसार, धमकी देने वाले ने ईमेल में लिखा कि जीशान को भी उनके पिता की तरह मार दिया जाएगा और इसके बदले 10 करोड़ रुपये की फिरौती की मांग की गई है। मेल में यह भी चेतावनी दी गई है कि हर छह घंटे में ऐसे ईमेल भेजे जाएंगे। एएनआई से बात करते हुए जीशान सिद्दीकी ने बताया, मुझे मेल के जरिए धमकी दी गई है। मेल के अंत में 'डी कंपनी' का नाम लिखा था। इसमें 10 करोड़ की फिरौती मांगी गई है। पुलिस ने बयान दर्ज कर लिया है और जांच जारी है। हमारा परिवार बेहद परेशान है। पुलिस ने जीशान सिद्दीकी से मेल की जानकारी लेकर बयान दर्ज कर लिया है। मामले की गंभीरता को देखते हुए साइबर सेल और क्राइम ब्रांच को जांच में लगाया गया है।

गुजरात में ट्रेनिंग प्लेन क्रैश, एक पायलट की मौत

- अमरेली के रिहायशी इलाके में गिरा प्राइवेट कंपनी का प्लेन, क्रैश होने के बाद ब्लास्ट

अमरेली (एजेंसी)। गुजरात में अमरेली के गिरिया रोड स्थित रिहायशी इलाके में एक पायलट ट्रेनिंग सेंटर का प्लेन दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे में पायलट की मौत हो गई है। विमान के गिरने के बाद जोरदार धमाका हुआ, जिससे पूरे

इलाके में दहशत फैल गई। सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की टीम और पुलिस मौके पर पहुंची और बचाव कार्य शुरू किया। प्लेन में एक ही पायलट सवार था अमरेली पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, हादसे का शिकार हुआ यह प्लेन एक निजी कंपनी द्वारा संचालित था। हादसे का शिकार हुए प्लेन में एक ही पायलट सवार था, जिसकी मौत हो गई। पायलट का नाम अनिकेत महाजन है। हादसे से पहले पायलट ने चार बार उड़ान भरी थी। यह ट्रेनिंग सेंटर अपने एकल इंजन वाले विमानों के जरिए ट्रेनिंग देता है।

बहुत सारी नौकरियां चली जाएंगी, एआई पर 'सुप्रीम' चिंता

- कहा-भविष्य में ड्राइवर का काम एआई से होगा, इसके खतरनाक परिणाम होंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के तेजी से हो रहे आविष्कार से तमाम सुविधाएं मिल रही हैं तो रोजगार से जुड़ी चिंताएं भी लोगों को सता रही हैं। इस चिंता में अब सुप्रीम कोर्ट भी शामिल हो गया है। अदालत ने मंगलवार को एक केस की सुनवाई के दौरान कहा कि भविष्य में ड्राइवर का काम एआई से होगा। इसके खतरनाक परिणाम होंगे और बड़े पैमाने पर लोग बेरोजगार हो सकते हैं।

जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस एनके सिंह की बेंच ने एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए यह बात कही, जिसमें मांग की गई थी कि सरकार को इलेक्ट्रिकल वीकल्स की खरीद और उनके इस्तेमाल के लिए प्रोत्साहित करने वाली नीति बनाने को को कहा जाए। इसी दौरान अदालत ने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कारण ड्राइवरों के रोजगार पर भी असर पड़ेगा। अदालत ने कहा, हमारी चिंता यह है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से इन ड्राइवरों का रोजगार नहीं जाना चाहिए। भारत में ड्राइवर की नौकरी भी रोजगार का एक बड़ा माध्यम है। मजाकिया अंदाज में जस्टिस सूर्यकांत ने कहा कि एआई से तो वकीलों को भी टक्कर मिल रही है। ऐसे टूल आ गए हैं, जिनसे आप कोई भी कानूनी राय ले सकते हैं। उन्होंने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस तेजी से बढ़ती हुई तकनीक है। कुछ महीनों में ही कोई एक अच्छा मॉड्यूल आ जाता है। फिलहाल हम देख रहे हैं कि एआई

आधारित एडवोकेट टूल हैं। अमेरिका में तो इनका खूब इस्तेमाल हो रहा है। हमें भी वकीलों को लेकर चिंता होती है। बता दें कि भारत में भी बड़े-बड़े उद्योगपति इसे लेकर चिंता जताते रहे हैं। कॉन्टेंट राइटिंग, कंसल्टेंसी समेत कई ऐसे बिजनेस हैं, जिन पर एआई के चलते विपरीत प्रभाव पड़ने की आशंका जताई जा रही है। इलेक्ट्रिक कारों की खरीद की नीति को लेकर दायर पीआईएल के लिए प्रशांत भूषण पक्ष रख रहे थे। उन्होंने कहा कि भारत में इलेक्ट्रिकल वीकल्स को तेजी से बढ़ावा देना होगा। ऐसा इसलिए क्योंकि दुनिया के 15 सबसे प्रदूषित शहरों में 14 तो भारत के ही हैं। उन्होंने कहा कि मेरी मांग है कि सरकार खुद ऐसी नीति लागू करे। उन्होंने कहा कि सरकार यदि आगे नहीं बढ़ेगी तो फिर दूसरे विभाग कैसे आगे आएंगे। उन्होंने कहा कि सरकार को बेसिक इन्फ्रा मुहैया कराना चाहिए। प्रशांत भूषण ने कहा कि 400 किलोमीटर की दूरी पर इलेक्ट्रिक वीकल्स की चार्जिंग सेंटर मिलते हैं। अटॉर्नी जनरल आर. वेंकटरमानी ने सरकार का पक्ष रखते हुए कहा कि हमें कुछ समय दिया जाए। फिर हम बताएंगे कि आखिर सरकार की इसे लेकर क्या नीति है। अदालत ने अब इस मामले की सुनवाई के लिए 14 मई की तारीख तय की है।

अमेरिकी उपराष्ट्रपति ने परिवार समेत देखा आमेर फोर्ट

- वेंस ने कहा-भारत में मेरी पत्नी मुझसे बड़ी सेलिब्रिटी हैं

जयपुर (एजेंसी)। अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस भारत दौरे पर हैं। मंगलवार सुबह उन्होंने पत्नी उषा, बेटों विवेक, इवान और बेटी मीराबेल के साथ जयपुर का आमेर किला देखा। वे बेटी को गोद में लेकर घूमते हुए दिखे। वहीं, दोपहर को उन्होंने एक बिजनेस समिट को संबोधित करते हुए कहा कि मेरी पत्नी भारत में मुझसे बड़ी सेलिब्रिटी है। इसके साथ ही वेंस ने कहा कि भारत और अमेरिका के बीच ट्रेड समझौता जल्द होने के आसार हैं। इससे पहले वेंस मंगलवार सुबह जयपुर शहर से करीब 10 किमी दूर अरावली की पहाड़ियों पर स्थित आमेर किले में

जीप से पहुंचे। आमेर फोर्ट के जलेब चौक पर दो हाथियों (चंदा और पुष्पा) ने मेहमानों का स्वागत किया। लोक कलाकारों ने भी कच्छी घोड़ी, घूमर और कालबेलिया डांस कर उनका वेलकम किया। इसके बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी ने वेंस के परिवार से मुलाकात की। वेंस सेंड स्टोन, संगमरमर और पीले पत्थर से बने आमेर फोर्ट पर करीब डेढ़ घंटे रुके। उन्होंने फोर्ट में दीवान-ए-आम, गणेश पोल और मान सिंह महल देखा। इसके साथ ही वेंस के परिवार ने आमेर महल में स्थित विश्व प्रसिद्ध शीशमहल भी देखा। यह शीशमहल कीमती पत्थर और विदेशी कांच से बना है, सैकड़ों साल पहले इसके लिए बेल्जियम से कांच आयात किए गए थे। वेंस ने बेटी को गोद में लेकर फोर्ट को चारों तरफ से दिखाया।

निशिकांत दुबे के खिलाफ अगले हफ्ते सुनवाई करेगा सुप्रीम कोर्ट

- कहा था-गृह युद्ध के लिए सीजेआई जिम्मेदार, याचिका की स्वीकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के खिलाफ दायर याचिका पर सुनवाई को तैयार हो गया है। कोर्ट ने सुनवाई के लिए याचिका अगले सप्ताह लिस्ट करने को कहा है। हालांकि अभी तारीख तय नहीं की है। याचिका में सुप्रीम कोर्ट और चीफ जस्टिस के खिलाफ दिए भाजपा सांसद के बयानों के वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से हटाने की मांग की गई है। मामला जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस एजे मसीह की बेंच के सामने तुरंत सुनवाई के लिए रखा गया था। निशिकांत दुबे ने 19 अप्रैल को कहा था- देश में गृह युद्ध के लिए सीजेआई संजीव खन्ना और धार्मिक युद्ध भड़काने के लिए सुप्रीम कोर्ट जिम्मेदार है। दुबे सुप्रीम कोर्ट के राष्ट्रपति को विधेयकों पर फैसला लेने के लिए समय सीमा तय करने के फैसले पर बात कर रहे थे।

नौकरियों पर घिरी सरकार दे रही कुछ अच्छा होने का संकेत!

नई दिल्ली (एजेंसी)। पिछले कुछ दिनों में देश के दो शीर्ष अधिकारियों ने देश में रोजगार और हायर ब्यूरोक्रेसी की दिक्कतों को लेकर कुछ बड़ी बातें कही हैं। ये शीर्ष अधिकारी हैं देश के कैबिनेट सचिव टीवी सोमनाथन और प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव पीके मिश्रा, जो कि एक रिटायर्ड आईएएस हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2047 तक 'विकसित भारत' का लक्ष्य लेकर चल रहे हैं। 2024 के लोकसभा चुनावों से पहले से ही उन्होंने

इसे ही अपने राजनीतिक, आर्थिक और कूटनीतिक विचारों का आधार बना रखा है। वे लगभग हर संबोधन में देश की आजादी के 100 वर्ष पूरे होने पर भारत को पूर्ण रूप से विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प जताते हैं। ऐसी स्थिति में दो शीर्ष नौकरशाहों का देश में आम लोगों के रोजगार से लेकर हायर ब्यूरोक्रेसी में एक्सपर्ट अफसरों के अभाव की वजह से आने वाली चुनौतियों पर खुलकर बोलना बहुत कुछ कहता है।

विकसित होता भारत, रोजगार पैदा करने की चुनौती

जहां एक तरफ सरकार के शीर्ष अधिकारी ने अपने कामकाज में एक्सपर्ट की कमी से होने वाली दिक्कतों की ओर इशारा किया है, वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रधान सचिव पीके मिश्रा ने ओडिशा के संबलपुर में भारतीय प्रबंधन संस्थान में एक कार्यक्रम के दौरान स्टूडेंट्स को बताया कि किस तरह से भारत को विकसित बनाने के लिए लाखों रोजगार पैदा करने का समय आ चुका है। उन्होंने कहा, इस वक्त दुनिया की अर्थव्यवस्था कई मुश्किलों का सामना कर रही है।

बीएमसी चुनाव में फिर से बसेंगे टूटे हुए 'घर'!

- पार्टी तोड़ने वाले वाले भाई-भतीजे दिखाएंगे, हम साथ-साथ हैं
- महाराष्ट्र निकाय चुनाव से पहले नए सिरे से गठबंधन की तैयारी

मुंबई (एजेंसी)। बृहन्मुंबई महानगर पालिका (बीएमसी) चुनाव से पहले महाराष्ट्र की राजनीति में बड़ा ट्विस्ट आ सकता है। महायुति और महा विकास अघाड़ी के समीकरण में उलटफेर होने की संभावना भी बन रही है। मुलाकातों और पर्दे के पीछे जारी बातचीत से यह उम्मीद जताई जा रही है कि महाराष्ट्र निकाय चुनाव से पहले रूठे फिर मानेंगे और खून के रिश्ते फिर से करीब आएंगे। बताया जा रहा है कि एनसीपी नेता अजित पवार फिर से चाचा शरद पवार के साथ आ सकते हैं। 20 साल पहले चाचा बाल ठाकरे के पुत्रमोह से दुखी होकर मनसे पार्टी बनाने वाले राज ठाकरे भी चचेरे भाई उद्धव के साथ गठबंधन के लिए तैयार हैं। सूत्रों के अनुसार, राज ठाकरे ने अपने विकल्प खुले रखे हैं और वह एकनाथ शिंदे के संपर्क भी हैं। उन्होंने अपने कार्यकर्ताओं को चुप रहने की सलाह दी है।

एकनाथ शिंदे भी चाहते हैं राज ठाकरे का साथ

दूसरी ओर, महाविकास अघाड़ी में भी उद्धव सेना ने कांग्रेस और शरद पवार के अलग हटकर बीएमसी चुनाव लड़ने के सुर उठने लगे। यूबीटी सांसद संजय राउत ने भी कहा था पार्टी कार्यकर्ताओं की मांग है कि शिवसेना को बीएमसी चुनाव अपने दम पर लड़ना चाहिए। कांग्रेस और एनसीपी (एसपी) भी अकेले रह गई। अलग-अलग चुनाव लड़ने के ऐलान ने नए गठबंधन बनाने का रास्ता साफ कर दिया। अब एकनाथ शिंदे मुंबई और ठाणे जैसे इलाकों में उद्धव सेना से मुकाबले के लिए नए साथी की तलाश में जुट गए। उनकी नजर भी राज ठाकरे पर टिकी है। अगर शिंदे और राज ठाकरे एक साथ चुनाव लड़ते हैं तो असली-नकली शिवसेना के नैरेटिव को नया ट्विस्ट मिल सकता है।

बीजेपी की एक चाल से बदला सियासी माहौल

पिछले पांच साल में मुंबई में राजनीतिक उलटफेर हुए और नई पार्टियों के साथ नए गठबंधन का दौर शुरू हुआ। विधानसभा चुनाव में महायुति की प्रचंड जीत के बाद कांग्रेस, एनसीपी (शरद पवार) और शिवसेना (यूबीटी) बैकफुट पर चली गई। महाविकास अघाड़ी में कानाफूसी शुरू हो गई। एकनाथ शिंदे और अजित पवार बड़े गेमचेंजर बनकर उभरे। बीजेपी पहले से ज्यादा पावरफुल हो गई। राज ठाकरे एक बार फिर अपनी पार्टी के अस्तित्व के जूझते नजर आए।

संकट मोचन संगीत समारोह

यहीं से राजन-साजन मिश्र के संगीत ने भरी थी उड़ान

राजेन्द्र शर्मा

(कला समीक्षक एवं उप्र सरकार में अधिकारी)

देश ही नहीं, देश की सरहदों के पार जर्मनी, फ्रांस, स्विट्जरलैंड, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, ब्रिटेन, सिंगापुर सहित पूरी दुनिया में अपने ख्याल गायिकी की भीनी भीनी खुशबू बिखेर कर 'राजन-साजन मिश्रा' की जोड़ी के रूप में ख्यात राजन-साजन मिश्रा ने अपनी संगीत यात्रा की उड़ान संकट मोचन संगीत समारोह के मंच से ही भरी थी, जिसे याद कर साजन मिश्र आज भी भावुक हो उठते हैं।

वाराणसी में कबीरचौरा शास्त्री य संगीत के कलाकारों का गढ़ था। इसी कबीरचौरा मोहल्लों में शास्त्रीय संगीत की अपनी पुश्तैनी विरासत को संभालते हुए पंडित बड़े रामजी मिश्रा और उनके पुत्र पंडित हनुमान मिश्रा और पंडित गोपाल मिश्र रहा करते थे। पं. हनुमान मिश्रा और पंडित गोपाल मिश्र दोनों भाई सारंगी के उस्ताद थे। पं. हनुमान मिश्रा के पांच साल की छोट बड़ाई में दो पुत्र राजन और साजन चाचा गोपाल मिश्र से ही सुरों का 'क ख' सीखते। उस समय किसी ने यह कल्पना नहीं की थी कि यही दोनों बच्चे एक दिन ख्याल गायिकी के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वाराणसी का परचम फहरायेगें।

किस्से की शुरुआत वर्ष 1968 से शुरु होती है। 46वें संकट मोचन संगीत समारोह की तैयारी चल रही थी। उस समय तक समारोह में मुख्य रुप से वाराणसी के कलाकार ही अपनी कला का प्रदर्शन करते थे। प्रख्यात सारंगी वादक हनुमानप्रसाद मिश्र संकट मोचन संगीत समारोह के संस्थापक महंत अमरनाथ मिश्र की मित्र मंडली के सदस्य थे। महंत अमरनाथ मिश्र ने इस आयोजन में मौका देने की गरज से सत्रह बरस के राजन और ग्यारह साल के साजन को पहली बार प्रस्तुति देने के लिए कहा तो घुट्टी में ही सुरों का स्वाद चख चुके दोनों भाइयों ने ऐसी परिपक्व प्रस्तुति दी जिसे चहुं ओर सराहना मिली। जिसके फलीभूत जल्दी ही दोनों भाई मंदिरों में नियमित कलाकार बन गए।

सत्तर वर्षीय साजन उन दिनों को याद करते हुए कहते हैं कि 'इस तरह हमने अपने संगीत के साथ एक आध्यात्मिक जुड़ाव विकसित किया, क्योंकि ये प्रदर्शन भगवान को अर्पित किए जाने जैसा था। हमने दिग्गजों को सुनने में भी बहुत समय बिताया; बनारस में बहुत सारे थे। उन्होंने मिलकर घराने की शैलीगत विशेषताओं का निर्माण किया। गायन, वादन और नृत्य शहर की संस्कृति में समाहित हैं।'

वर्ष 1968 से 1979 तक ग्यारह साल पंख लगाकर उड़ गये। राजन 28 और साजन 23 बरस के युवा हो चुके थे और ग्यारह साल से अनवरत संकट मोचन संगीत समारोह में अपनी हाजिरी लगा रहे थे। वर्ष 1979 में संकट मोचन संगीत समारोह चल रहा था। सात अप्रैल को पंडित रविशंकर का जन्मदिन होसे वह ब्रहम मुहूर्त में संकट मोचन के दर्शन करने मंदिर आये। उस समय पंडित राजन-साजन मिश्र का गायन चल रहा था। सितार सम्राट पंडित रविशंकर दोनों की लयकारी आवाज सुनकर भाव विभोर हो उठे। संकट मोचन के दर्शन कर रवि शंकर महंत वीरभद्र मिश्र के पास बैठकर राजन-साजन को सुनने लगे और प्रस्तुति समाप्त होते ही घोषणा कर दी कि मैंने राजन-साजन का एक प्रोग्राम बुक कर दिया है। इस तरह संकट मोचन

पं.साजन और पं. स्वरांश मिश्रा

संगीत समारोह का आयोजन दोनों भाइयों के जीवन में ऐसी बहार लेकर आया कि इसके बाद उन्हें एक से बढ़कर एक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम मिले। वाराणसी के इन सपूतों ने पूरी दुनिया में अपने सुरों का जलवा बिखेर कर नया कीर्तिमान स्थापित किया।

राजन-साजन जोड़ी ने श्रीलंका में अपना पहली प्रस्तुति दी। उसके बाद तो जर्मनी, फ्रांस, स्विट्जरलैंड, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, ब्रिटेन, सिंगापुर सहित पूरी दुनिया में दोनों ने अपनी ख्याल गायिकी से धूम मचा दी। ख्याल शैली में अतुलनीय गायन के लिए लोकप्रिय इन भाइयों की जोड़ी को 1971 में प्रधानमंत्री का संस्कृत अवॉर्ड मिला। 1994-95 में गंधर्व सम्मान और 2007 में उन्हें पद्म भूषण से नवाज़ा गया। उनके असंख्यी एल्बम संगीत प्रेमियों के लिए उपलब्ध हैं।

राष्ट्रीय अतंराष्ट्रीय स्तर पर अपने गायन के बल पर वाराणसी का परचम फहराने की जुस्तजू में बहुत सालों तक राजन-साजन मिश्रा संकट मोचन संगीत समारोह में नहीं आ सके लेकिन 1993 में वर्तमान महंत विशम्भरनाथ मिश्र से मिलने के बाद वचन दिया कि जब तक जीवित रहेंगे तब तक समारोह में आएंगे और इस वादे को उन्होंने निभाया भी। वर्ष 2021 में राजन मिश्रा के असमय निधन के बाद उस वादे को निभाने की जिम्मेदारी साजन मिश्रा पर आ गयी, जिसे वह अपने पुत्र स्वारांश मिश्रा के साथ पूरी निष्ठा से निभा रहे हैं। 102वें संकट मोचन संगीत की अन्तिम निशा की अन्तिम प्रस्तुति पंडित साजन मिश्रा और पंडित स्वरांश मिश्रा की प्रस्तुति से हुई। पिता पुत्र की जोड़ी का ही कमाल था कि सुबह साढ़े पांच बजे के बाद प्रारम्भ हुई प्रस्तुति में रात भर जागने के बाद भी श्रोता जमे रहे।

संकट मोचन मंदिर के महंत प्रो. विश्वम्भरनाथ मिश्र कहते हैं कि बनारस घराने में एक से एक बढ़कर कलाकार हुए हैं, लेकिन इस घराने को असली पहचान पंडित राजन- साजन मिश्र की जोड़ी ने ही दिलाई। (समाप्त)

इंदौर में सीएम करेंगे पंचशील आईटी टेक्नो पार्क का शुभारंभ

15 हजार युवाओं को मिलेगा रोजगार; आईटी कंपनियां करेंगी 1 हजार करोड़ रुपए का निवेश

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में 27 अप्रैल को आयोजित होने वाले आईटी कॉन्क्लेव में सीएम इंदौर को एक और आईटी पार्क की सौगात देंगे। यह आईटी पार्क पंचशील (इंफ्रा डेवलपर) द्वारा तैयार किया जाएगा और इसका नाम आईटी टेक्नो पार्क होगा। बताया जा रहा है कि इस पार्क में 15 हजार से अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा। मध्यप्रदेश स्टेट इलेक्ट्रॉनिक्स डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन इंदौर के महाप्रबंधक द्वारकेश सर्राफ ने जानकारी दी कि कॉन्क्लेव में शामिल होने के लिए देश-विदेश की लगभग 80 आईटी कंपनियों से जुड़ी कई हस्तियां आ रही हैं।

आईटी कंपनियां करेंगी 1 हजार करोड़ रुपए का निवेश- द्वारकेश सर्राफ ने आगे बताया कि मुख्यमंत्री सुपर कॉरिडोर पर पंचशील टेक्नो पार्क प्रोजेक्ट का शुभारंभ करेंगे। इस प्रोजेक्ट के तहत सीसीआईपी के जरिए से आवंटित 10 एकड़ जमीन पर 20 लाख वर्गफुट में आईटी बिल्डिंग का निर्माण किया जाएगा। शुरुआत में आईटी कंपनियां लगभग 1 हजार करोड़ रुपए का निवेश करेंगी, जिससे 15 हजार युवाओं को रोजगार मिलेगा।

सर्राफ के मुताबिक, सुपर कॉरिडोर पर पंचशील टेक्नो पार्क के अलावा मुख्यमंत्री सिंहासा आईटी पार्क में स्थापित होने जा रहे 120-सीटर इन्क्यूबेशन सेंटर की भी शुरुआत करेंगे। इसके साथ ही दो नई कंपनियों, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड और कास्टनेक्स का भी लोकार्पण किया जाएगा। इस प्रोजेक्ट के तहत 10,248 वर्गफुट क्षेत्र में 100 स्टार्टअप्स के लिए इन्क्यूबेशन सेंटर शुरू किया जाएगा। मुख्यमंत्री इस प्रोजेक्ट का वर्चुअल शुभारंभ करेंगे।

इन्क्यूबेशन सेंटर में इनकी भी भागीदारी

इन्क्यूबेशन सेंटर की स्थापना मध्यप्रदेश स्टेट इलेक्ट्रॉनिक्स डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन, डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी और आईआईटी इंदौर के दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन के सहयोग से सात सालों के लिए की जा रही है। इससे पहले, एमपीआईडीसी इंदौर के क्रिस्टल आईटी पार्क में भी एक इन्कयूबेशन सेंटर शुरू किया गया था।

विधायक प्रतिनिधि का सिर दीवार पर मारा, लात-घूंसों से पीटा

इंदौर में घर के बाद अस्पताल के सामने भी की मारपीट; इलाज कराने आए थे

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में विधायक प्रतिनिधि कपिल पाठक से अस्पताल के बाहर भी मारपीट हुई। परिवार कपिल को घायल हालत में यहां लाया था। तभी आरोपियों ने उन्हें घेर लिया और पिटाई कर दी। सिर दीवार पर मारा और लात-घूंसों से पीटा। इसका वीडियो मंगलवार को सामने आया है। हीरा नगर के सुखलिया में शनिवार रात पानी के टैंकर को हटाने को लेकर कपिल पाठक और नगर निगम में नेता प्रतिपक्ष चिंटू चौकसे के बेटे-भतीजे के बीच विवाद हो गया था। विवाद इतना बढ़ा कि चिंटू चौकसे के परिवार के लोग लाठी-डंडे और रॉड लेकर आ गए। उन्होंने कपिल के साथ मारपीट की। उनके घर के बाहर खड़ी गाड़ी में तोड़फोड़ की। इसका वीडियो भी सामने आया था। वहीं, सोमवार को बीजेपी नगर अध्यक्ष सुमित मिश्रा पुलिस कंट्रोल रूम पहुंचे। उन्होंने एडिशनल डिप्टी कमिश्नर रामस्नेही मिश्रा को बताया कि कपिल के साथ दो बार मारपीट हुई है। घर और निजी अस्पताल के बाहर। इस कारण उसे अस्पताल से भागना पड़ा था। मिश्रा ने पुलिस से सीसीटीवी चेक करने के लिए कहा था, जिसके बाद अस्पताल के बाहर मारपीट का खुलासा हुआ। भाजपा के कार्यकर्ता पाठक परिवार के साथ विजय नगर थाने पहुंचे और पुलिस कमिश्नर से फुटेज के आधार पर कार्रवाई की मांग की। कपिल की पत्नी विनीता पाठक ने पुलिस को बताया, कपिल किसी को पहचान नहीं रहे हैं। उनके पिता जी की हालत भी ठीक नहीं है।

इंदौर से कोयंबटूर के लिए शुरू होगी फ्लाइट

पहली बार शुरू होगी इंदौर से सीधी उड़ान

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर से कोयंबटूर के बीच जल्द ही सीधी फ्लाइट शुरू होने वाली है। एयरपोर्ट सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार इंदौर से कोयंबटूर के लिए एयर इंडिया फ्लाइट का संचालन करेगी। कंपनी ने इस फ्लाइट के संचालन की जानकारी अपने सोशल मीडिया पेज साझा की है, लेकिन फ्लाइट कब से शुरू होगी इसकी जानकारी नहीं दी है। इंदौर से लगातार यात्री कोयंबटूर के लिए यात्रा करते हैं। इस उड़ान के शुरू होने पर इंदौर से चेन्नई के बाद तमिलनाडु के लिए यह दूसरी उड़ान होगी, जिससे इंदौर का तमिलनाडु से संपर्क भी मजबूत होगा। ट्रेवल एजेंट जोश ने बताया कि- एयर इंडिया नए मार्गों पर उड़ानें शुरू करने पर काम कर रही है। एयर इंडिया की ही सहयोगी कंपनी एयर इंडिया एक्सप्रेस भी इंदौर से कई नई उड़ानें शुरू कर चुकी है। इनमें दिल्ली, बेंगलुरु, हैदराबाद और गोवा की उड़ानें शामिल हैं। साथ ही कंपनी पहले से शारजाह की फ्लाइट भी संचालित कर रही है। जोश ने बताया कि इस फ्लाइट के शुरू होने से इंदौर का साउथ से संपर्क बेहतर हो सकेगा। व्यापार के लिहाज से भी यह फ्लाइट काफी फायदेमंद होगी। हालांकि कंपनी के स्थानीय अधिकारियों ने बताया कि इस संबंध में अब तक उन्हें कोई जानकारी नहीं मिली है। बता दें कि तमिलनाडु स्थित कोयंबटूर को दक्षिण भारत का मैनचेस्टर भी कहा जाता है। एयर इंडिया द्वारा इस मार्ग पर उड़ान शुरू किए जाने को लेकर अपने ऑफिशियल पेज के माध्यम से जानकारी जारी की गई है।

तापमान में मामूली इजाफा

दो दिनों से गर्मी का एक जैसा मिजाज, दिन का पारा 39 डिग्री पर, दो दिन बाद तापमान में होगा इजाफा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में तीन दिनों से तापमान में हल्का उतार-चढ़ाव है लेकिन गर्मी का असर बना हुआ है। दिन में जन जीवन पर इसका असर देखा जा सकता है। रात को भी खासी गर्मी है। दो दिनों बाद तापमान में फिर इजाफा होगा। इन दिनों दिन का तापमान 39 डिग्री से ज्यादा है जो सामान्य है। पिछले 24 घंटों में रात के तापमान में 1 डिग्री की बढ़ोतरी हुई है। बीती रात तापमान 23.5 (+1) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया जो सामान्य से 1 डिग्री ज्यादा है। इस बार अप्रैल में दिन का तापमान 18 अप्रैल को 41.7 (+3) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था। रात का तापमान 9 अप्रैल को 26.5 (+7) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था।मंगलवार सुबह से मौसम साफ है और गर्मी का असर कुछ कम है। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन के मुताबिक अगले कुछ दिनों तक गर्मी का असर तेज रहेगा। 23 अप्रैल को इंदौर में गर्मी का असर तेज हो सकता है। इस दौरान पारा 41 डिग्री पार जा सकता है।

दो कोविड पॉजिटिव मरीज मिले

अलग-अलग बीमारियों के कारण एडमिट किया

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में लंबे समय बाद कोविड के दो मरीज मिले हैं। इनमें एक युवक है जबकि दूसरी बुजुर्ग महिला है। दोनों को एक प्राइवेट हॉस्पिटल में एडमिट किया गया। दोनों को अलग-अलग बीमारियां हैं। इनमें से महिला की अन्य बीमारियों के चलते सोमवार को मौत हो गई जबकि युवक का इलाज चल रहा है।झ दोनों मरीज इंदौर के हैं। इनमें से युवक को दो-तीन दिनों से सर्दी खांसी थी। उसने पहले दूसरे अस्पताल में दिखाया लेकिन फर्क नहीं पड़ने पर अरबिंदो अस्पताल में दिखाया। यहां उसकी कई प्रकार की जांचें हुईं। जिनमें कोविड की पुष्टि हुई। अस्पताल के डायरेक्टर डॉ. विनोद भंडारी ने बताया कुछ मरीज ऐसे होते हैं जिनकी सर्दी-खांसी जल्द ठीक नहीं होती है। ऐसे में उनकी एक विशेष फ्लू पैनल जांच होती है जिसमें कई प्रकार की जांचें शामिल हैं। इसी में कोविड की भी जांच होती है। इसमें युवक कोविड पॉजिटिव पाया गया। उसे तत्काल अलग वार्ड में आइसोलेट किया गया है। उसकी हालत ठीक है।झ दूसरी महिला इंदौर के पश्चिमी क्षेत्र की रहने वाली है। 74 वर्षीय इस महिला को किडनी की बीमारी के कारण एडमिट किया गया था। उसे सीवियर सेप्टिक था। वह कोमार्बिट पैसेंट थी। उसकी गंभीर हालत को देखते हुए उसकी भी फ्लू पैनल जांच की गई। इसमें वह भी कोविड पॉजिटिव पाई गई।

कभी 14 लाख में बिका नंबर 1 लाख में गया

बेस से प्राइज से ज्यादा में नीलाम हुए पांच वीआईपी नंबर

इंदौर (एजेंसी)। वीआईपी नंबरों की नीलामी में इस बार कोई खासा उत्साह देखने को नहीं मिला। एमपी-09 एएल-0001 बिना किसी प्रतिस्पर्धा के अपनी बेस प्राइज एक लाख में ही बिक गया। पूरी नीलामी में 54 नंबर बिके हैं, जिसमें से केवल पांच नंबरों पर दो-दो दावेदार थे। ये नंबर भी कोई ज्यादा राशि पर नहीं बिके। बीते साल परिवहन विभाग ने वीआईपी नंबरों की नीलामी से 11 करोड़ रुपए कमाए थे। आरटीओ प्रदीप शर्मा ने बताया कि पिछले सप्ताह नीलामी खत्म हुई है, जिसमें 54 नंबर बिके हैं। 0013, 009, 4141, 7777, 8888 जैसे नंबर अपनी बेस प्राइज से ज्यादा कीमत में बिके हैं। नई व्यवस्था के तहत हर सप्ताह वीआईपी नंबरों की नीलामी होती है। प्रदेशभर में वाहनों के वीआईपी नंबरों की नीलामी ऑनलाइन की जाती है। इंदौर में कार के 0001 नंबर को लेकर प्रतिस्पर्धा रहती है।

0001 नंबर के लिए रहती है खींचतान

अब तक सबसे महंगा (एमपी 09 सी-0001) नंबर 2016 में 14.01 लाख रुपए में बिका है। यह प्रदेश का सबसे महंगा नीलाम होने वाला नंबर है, वहीं 0001 सीरीज का एक नंबर 12.50 लाख रुपए में भी नीलाम हुआ है। हालांकि इस साल के प्रारंभ में हुई नीलामी में 0001 नंबर सिर्फ 20 हजार रुपए में ही बिका था।

इंदौर में नीलाम होते हैं सबसे महंगे वीआईपी नंबर

इंदौर आरटीओ में कई वीआईपी नंबर खाली हैं। लोग प्रमुख नंबरों को ले लेते हैं। बाकी वीआईपी नंबर खाली पड़े रहते हैं। अधिकारी इन नंबरों को सामान्य रूप से देने को लेकर कई बार परिवहन मुख्यालय को भेज चुके हैं। लेकिन अब तक इस पर निर्णय नहीं हो पाया। अधिकारियों के अनुसार वैसे तो नीलामी सभी श्रेणी के वाहनों के लिए होती है, लेकिन कार के नंबरों के लिए लोग काफी उत्सुक रहते हैं। इसके अलावा, दो पहिया वाहनों के नंबर के लिए भी आवेदक बोली लगाते हैं। प्रदेशभर में सबसे अधिक नंबर इंदौर में ही बिकते हैं।

इंदौर कांग्रेस को भाजपाइयों की नसीहत

चिंटू जैसे बदमाश से बचे कांग्रेस; पटवारी सस्ती लोकप्रियता के लिए कानून पर उंगली न उठाएं

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर भाजपा नगर अध्यक्ष सुमित मिश्रा ने हाल ही में हुए भाजपा कार्यकर्ता कपिल पाठक और नेता प्रतिपक्ष चिंटू चौकसे के विवाद को लेकर कांग्रेस पार्टी पर निशाना साधा है। मिश्रा ने कहा कि चिंटू चौकसे जैसे गुंडे से कांग्रेस को बचना चाहिए और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी से आग्रह किया कि वे सस्ती लोकप्रियता के लिए कानून पर उंगली न उठाएं। सोमवार को सुमित मिश्रा रीगल स्थित पुलिस कंट्रोल रूम पहुंचे और यहां अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त रामस्नेही मिश्रा से मुलाकात की। उन्होंने बताया कि पुलिस प्रशासन अपनी कार्रवाई कर रहा है और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को भी इस घटना की जानकारी दी गई है। सुमित मिश्रा ने चिंटू चौकसे द्वारा परिवार के साथ मिलकर की गई इस घटना को इंदौर के राजनीतिक इतिहास के लिए दुर्भाग्यपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि इंदौर का राजनीतिक वातावरण ऐसी घटनाओं की इजाजत नहीं देता है और भाजपा सरकार में रहते हुए बदले की भावना से कोई कार्रवाई नहीं की गई है। मिश्रा ने आरोप लगाया कि चिंटू चौकसे जैसे व्यक्तियों पर 11 आपराधिक मामले दर्ज हैं और ऐसे लोगों से कांग्रेस को बचना चाहिए। साथ ही, उन्होंने कांग्रेस पार्टी को अपनी गुंडागर्दी से बाज आने और विकास में सहयोग देने की सलाह दी। सुमित मिश्रा ने कपिल पाठक के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि कपिल पाठक के बारे में वार्ड में आम जनता की राय जानने से यह पता चलेगा कि वह एक सेवाभावी व्यक्ति हैं, जो लोगों की मदद करते हैं और समाज के विभिन्न कार्यों में योगदान देते हैं।

मंगलवार भस्म आरती दर्शन

बाबा महाकाल का रजत चंद्र मुकुट और भांग से राजा स्वरूप श्रृंगार

उज्जैन (एजेंसी)। विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर में मंगलवार तड़के भस्म आरती के दौरान मंदिर के कपाट खोले गए। सभा मंडप में वीरभद्र जी के कान में स्वस्ति वाचन कर घंटी बजाकर भगवान से आज्ञा लेकर सभा मंडप वाले चांदी के पट खोला गया। गर्भगृह के पट खोलकर पुजारी भगवान का श्रृंगार उतार कर पंचामृत पूजन के बाद कर्पूर आरती की। त्रिनेत्र धारी भगवान महाकाल का भांग, चन्दन, रजत, मुकुट, रुद्राक्ष की माला अर्पित कर श्रृंगार किया गया। नंदी हाल में नंदी जी का स्नान,ध्यान, पूजन किया गया। जल से भगवान महाकाल का अभिषेक करने के पश्चात दूध, दही, घी, शक्कर, शहद, फलों के रस से बने पंचामृत से पूजन किया गया। भगवान महाकाल का रजत चंद्र त्रिशूल मुकुट भांग चन्दन ड्रायफ्रूट और भस्म चढ़ाई गई, शेषनाग का रजत मुकुट रजत की मुण्डमाल और रुद्राक्ष की माला के साथ-साथ सुगन्धित पुष्प से बनी फूलों की माला धारण की भगवान महाकाल ने। फल और मिष्ठान का भोग लगाया। झांझ मंजीरे डमरू के साथ भगवान महाकाल की भस्म आरती की गई। भस्म आरती में बड़ी संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने बाबा महाकाल का आशीर्वाद लिया। महा निर्वाणी अखाड़े की ओर से भगवान महाकाल को भस्म अर्पित की गयी। मान्यता है की भस्म अर्पित करने के बाद भगवान निराकार से साकार रूप में दर्शन देते है।

कुत्तों की नसबंदी मामले में सीएम-कलेक्टर को शिकायत

पीपुल फॉर एनिमल्स इंदौर की सदस्य ने की सुविधा बढ़ाने की मांग

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में चल रहे कुत्तों की नसबंदी अभियान को लेकर पीपुल फॉर एनिमल्स इंदौर की प्रियांशु जैन ने सीएम, कलेक्टर और जीव जंतु कल्याण बोर्ड को मेल कर शिकायत की है। शिकायत में प्रियांशु ने कहा कि नसबंदी के नाम पर डॉग्स के साथ क्रूरता हो रही है। 150 डॉग्स के नसबंदी के आदेश दिए गए हैं, लेकिन इतनी व्यवस्था नहीं है। उन्होंने नसबंदी को लेकर उचित व्यवस्था और कुत्तों को पकड़ने के टाइमिंग सहित कई मुद्दे उठाए हैं। प्रियांशु जैन ने आरोप लगाया कि निगम की टीम नसंबदी किए हुए डॉग्स को उठा रही है, जो कि एबीसी रुल्स 2001, 2003 के अंतर्गत गैरकानूनी है। डॉग्स को दोपहर 1 बजे तक पकड़ा जा रहा है, जो उचित नहीं है, क्योंकि बाहर का तापमान 40 डिग्री है। जिससे डॉग्स को नुकसान हो सकता है और उनकी जान भी जा सकती है। उन्होंने कहा है कि दूसरी जगह डॉग्स को सुबह 5 बजे से 8 बजे तक पकड़ा जाता है।झ उन्होंने लेटर भेज कर मांग की है कि डॉग्स की ज्यादा संख्या में नसबंदी करने के लिए इन्फ्रास्ट्रक्चर को बढ़ाया जाए, ज्यादा केनल बनाए जाएं, डॉक्टरों का भी अपॉइंटमेंट किया जाए ताकि नसबंदी के काम को सुचारू रूप से किया जा सके। अभी जो शेल्टर बने हैं, उसमें इतनी जगह नहीं है।

साथ ही कूलर भी नहीं है, ऊपर से टीन शेड है, जिससे ज्यादा गर्मी होती है। ऑपरेशन के बाद डॉग्स कैसे सहन करेंगे। जो डॉग्स कमजोर होंगे उनकी मृत्यु हो सकती है। इसके अलावा एक केनल में कई डॉग्स रखे हुए हैं, जो लड़ते हैं तथा उचित रूप से भोजन पानी भी नहीं कर पाते हैं। प्रियांशु ने बताया कि भंवरकुआं क्षेत्र में एक डॉग के टांके खुल गए थे, इस संबंध में अवगत कराया गया था।

इंदौर में 4 करोड़ के कार्यों का हुआ लोकार्पण-भूमिपूजन

विजयवर्गीय के क्षेत्र में सड़कों से लेकर जल निकासी तक होंगे काम शुरू

इंदौर (एजेंसी)। नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने अपने विधानसभा क्षेत्र के वार्ड क्रमांक 12 में 4 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का भूमिपूजन और लोकार्पण किया। इनमें से लगभग 2.5 करोड़ रुपए के कार्यों का लोकार्पण किया गया, जबकि 1.5 करोड़ रुपए के कार्यों का भूमिपूजन किया गया। यह सौगात पूर्व विधायक आकाश विजयवर्गीय ने नागरिकों को दी। कार्यक्रम में जिन विकास कार्यों का लोकार्पण किया गया, उनमें क्षेत्र के विभिन्न इलाकों में निर्मित सड़कों का लोकार्पण किया गया। इसमें यादव नंद नगर, गोविंद कॉलोनी, दुर्गा नगर, न्यू शीतल नगर, गंगा बाग और कर्मा नगर में निर्मित सड़कों का लोकार्पण शामिल है। इसके अलावा, महाराणा प्रताप नगर से शासकीय अस्पताल तक जल निकासी के लिए डाली गई स्टॉर्म वाटर लाइन का लोकार्पण भी किया गया।

इन कार्यों का भूमिपूजन किया

कार्यक्रम में जिन विकास कार्यों का भूमिपूजन किया गया, उनमें न्यू गोविंद कॉलोनी की गली क्रमांक 2 और 4 में सड़क निर्माण, दुर्गा नगर की गणेश मंदिर वाली गली में सड़क कार्य, गोविंद कॉलोनी स्थित पालीवाल धर्मशाला मार्ग, दुर्गा नगर में गणेश मंदिर के पीछे बैकलाइन, न्यू गोविंद कॉलोनी में सरस्वती स्कूल के पीछे बैकलाइन और यादव नगर की बैकलाइन शामिल हैं। इन कार्यों से क्षेत्रवासियों को बेहतर सड़क और जल निकासी की सुविधाएं मिलेंगी।झ कार्यक्रम में बोलते हुए नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा, हमारे प्रयासों से क्षेत्रवासियों को बेहतर जीवन सुविधाएं मिलेंगी। यह कार्य भाजपा कार्यकर्ताओं की मेहनत का परिणाम हैं और हम क्षेत्र में और विकास कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने यह भी कहा कि क्षेत्र में हुए विकास कार्यों से जनता को सीधे लाभ मिलेगा और क्षेत्र में खुशहाली आएगी। केंद्र सरकार द्वारा किए गए वक्फ बोर्ड में संशोधन के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि यह कदम एक ऐतिहासिक सुधार है, जिससे वक्फ बोर्ड की मनमानी पर अंकुश लगाया गया है।

उन्होंने आगे कहा, हमारा उद्देश्य क्षेत्र में जनहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देना है और इसके लिए हम लगातार काम कर रहे हैं। क्षेत्रवासियों की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखना हमारी जिम्मेदारी है, और हम इसे पूरी तरह से निभा रहे हैं। लोकार्पण और भूमिपूजन किए गए कार्यों की कुल लागत 4 करोड़ रुपए से अधिक है। इनमें सीमेंट कांक्रीट सड़कों का निर्माण, जल निकासी के लिए स्टॉर्म वाटर लाइन और अन्य आधारभूत संरचनाओं के कार्य शामिल हैं। इन कार्यों से क्षेत्रवासियों को आवागमन की सुगमता और जल निकासी की समस्याओं का समाधान होगा। कार्यक्रम के दौरान आकाश विजयवर्गीय का भव्य स्वागत किया गया। ढोल-ताशों और आतिशबाजी के साथ उनका स्वागत किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय पार्षद श्रीमती सीमा कृष्ण वल्लभ डाबी, भाजपा पदाधिकारी, कार्यकर्ता और बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी उपस्थित थे।

संपादकीय

बाबा को सही फटकार

दिल्ली हाईकोर्ट ने बाबा रामदेव द्वारा अपना शरबत उत्पाद बेचने के लिए एक पुराने शरबत ब्रांड रूह अफजा पर शरबत जिहाद छेड़ने के आरोप पर कड़ी नाराजगी जताते हुए कहा कि यह न्यायालय की अंतरात्मा को आघात पहुंचाने वाला है। कोर्ट की कड़ी फटकार के बाद बाबा रामदेव के वकील ने बाबा के शरबत प्रचार से सम्बंधित सभी वीडियो और अन्य प्रचार सामग्री हटाने का वचन दिया। योग गुरू बाबा रामदेव सत्ता से अपनी नजदीकी के चलते धंधा बढ़ाएं, वहां तक तो ठीक है, लेकिन अपना प्रॉडक्ट बेचने के लिए वो इस निचले स्तर तक जाएंगे, यह सोचना भी मुश्किल है। बाबा रामदेव के शरबत जिहाद वाले बयान पर दिल्ली हाईकोर्ट ने न्यायमूर्ति अमित बंसल ने कड़ा आदेश जारी करने की चेतावनी देते हुए कहा कि इस बयान का कोई औचित्य नहीं था। बाबा रामदेव ने तीन अप्रैल को अपने शरबत ब्रांड का प्रचार करते हुए हमदर्द कंपनी के शरबत पर नाम लिए बिना टिप्पणी की थी। इसका मकसद अपने गुलाब शरबत का प्रचार करना था। सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर वायरल हुए बाबा के वीडियो में दावा किया गया था कि रूह अफजा से अर्जित धन का उपयोग मदरसे और मस्जिद बनाने में किया गया। जबकि पतंजलि के शरबत से गुरूकुलम खुलेंगे। इस शरबत की लांचिंग 3 अप्रैल को की गई थी। बाबा ने कहा था कि देश में शरबत जिहाद चल रहा है। बाबा ने यह बात किस बिना पर कही, पता नहीं। लेकिन जब इस पर बवाल हुआ तो रामदेव ने कहा कि मैंने किसी का ब्रांड या समुदाय का नाम नहीं लिया। लेकिन उनका स्पष्ट इशारा बरसों से यूनानी दवा बनती आ रही कंपनी 'हमदर्द' की ओर था। कंपनी के वकील मुकुल रोहतगी ने कहा कि बाबा का यह बयान अपमान से परे है और यह 'सांप्रदायिक विभाजन' पैदा करने का मामला है। यह नफरत फैलाने वाला भाषण है। उधर कोर्ट की फटकार के बाद पतंजलि के संस्थापक बाबा रामदेव ने कहा कि हम ऐसे सभी वीडियो हटा लेंगे, जिनमें धार्मिक टिप्पणियां की गई हैं। कोर्ट इस सम्बंध में रामदेव को एफिडेविट दाखिल करने का आदेश भी दिया है। बाबा के विवादित प्रचार के खिलाफ हमदर्द कंपनी ने दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी। इस पर सुनवाई करते हुए कोर्ट ने कहा कि बाबा रामदेव ऐसी बातें अपने दिमाग तक सीमित रखें, इन्हें जाहिर ना करें। इसके पहले भी बाबा रामदेव और उनके सहयोगी बालकृष्ण अपने उत्पाद बेचने के लिए भ्रामक विज्ञापन करते रहे हैं। विवाद बढ़ा तो 12 अप्रैल को रामदेव ने एक और वीडियो पोस्ट किया। इसमें रामदेव ने कहा, 'मैंने एक वीडियो डाला, उससे सबको मिर्ची लग गई। मेरे खिलाफ हजारों वीडियो बनाए गए। कहा जाने लगा कि मैंने शरबत जिहाद का नया शिगूफा छोड़ दिया। बाबा के इस बयान पर राजनीति भी शुरू हो गई। कांग्रेस नेता दिग्विजयसिंह ने कहा कि योग गुरु रामदेव अपने प्रोडक्ट की बिक्री बढ़ाने के लिए धर्म और नफरत का सहारा ले रहे हैं। ऑल इंडिया मुस्लिम जमात के अध्यक्ष मौलाना शहाबुद्दीन रजवी बरेलवी ने कहा कि रामदेव अपने शरबत का खूब प्रचार करें, लेकिन हमदर्द कंपनी के रूह अफजा शरबत को जिहाद से न जोड़ें। गौरतलब है कि दिल्ली हमदर्द कंपनी करीब सौ साल से यूनानी दवाइयां और शरबत रूह अफजा बना रही है। रूह अफजा का अर्थ होता है' आत्मा को तरोताजा करने वाला। लेकिन बाबा के इरादे इसके ठीक उलटे हैं। बाबा रामदेव को भी अपने उत्पाद बेचने का पूरा हक है, लेकिन वो प्रतिस्पर्द्धी कंपनी के उत्पाद को बदनाम कर ऐसा करते हैं तो यह निंदनीय ही नहीं, अस्वीकार्य भी है। अपनी कमीज को उजली बताने के लिए दूसरे की कमीज को मैली बताना जरूरी नहीं है।

नजरिया

अरविन्द मोहन

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

क्या होगी ट्रम्प के टोटकों की परिणति?

तब नए जुमले गढ़ने वाले अकादमिक जगत में अरब दुनिया के लिए 'चौथी दुनिया' पद भी प्रयोग किया जाने लगा था और इजरायल से शांति के साथ अरब जगत की उपनिवेशवादी शोषण से मुक्त नई दुनिया की तरह उभरने की भविष्यवाणी भी की जाने लगी थी। कहा गया था कि अरबों को वह सब नहीं भोगना पड़ेगा जो कई सौ साल के औपनिवेशिक शासन के चलते हमको या तीसरी दुनिया के देशों को भुगतना पड़ा है। तब समाजवादी चिंतक किशन पटनायक ने कहा था कि यह अरब समृद्धि मृगमरीचिका ही बनेगी और अमेरिका समेत पश्चिमी देश अरबों को भोग-विलास का ऐसा गुलाम बना देंगे कि उनके पास दौलत तो रहेगी, लेकिन राष्ट्रीय या क्षेत्रीय गौरव का मान नहीं होगा। समृद्धि और सम्मान अब सिर्फ पश्चिम की चीज रह जाएंगे।

साठ-पेंसठ साल पहले, जब अरब देशों में तेल की खोज और उत्पादन परवान पर था और उनकी समृद्धि से अमेरिका और यूरोप भी मालामाल हो रहा था, तब इन अरब देशों ने 'ऑर्गेनाइजेशन ऑफ पेट्रोलियम एक्सपोर्टिंग कन्ट्रीज' (ओपेक) समेत कई संगठन बनाए जिनके पीछे अकूत पैसों की ताकत के चलते कई तरह की संभावनाएं नजर आ रही थीं। इनमें एक संभावना तो उनके राजनैतिक और राजनयिक रूप से इतना मजबूत होने की भी थी कि लगता था कि अरब-इजरायल संघर्ष में इस नई उभरती ताकत के चलते सम्मानजनक फैसला हो जाएगा और इजरायल को समर्थन देने वाले अमेरिका और यूरोप ही समाधान कराने वाले होंगे, क्योंकि उनको तेल की ही नहीं अरब जगत के पैसों की भी जरूरत थी।

तब नए जुमले गढ़ने वाले अकादमिक जगत में अरब दुनिया के लिए 'चौथी दुनिया' पद भी प्रयोग किया जाने लगा था और इजरायल से शांति के साथ अरब जगत की उपनिवेशवादी शोषण से मुक्त नई दुनिया की तरह उभरने की भविष्यवाणी भी की जाने लगी थी। कहा गया था कि अरबों को वह सब नहीं भोगना पड़ेगा जो कई सौ साल के औपनिवेशिक शासन के चलते हमको या तीसरी दुनिया के देशों को भुगतना पड़ा है। तब समाजवादी चिंतक किशन पटनायक ने कहा था कि यह अरब समृद्धि मृगमरीचिका ही बनेगी और अमेरिका समेत पश्चिमी देश अरबों को भोग-विलास का ऐसा गुलाम बना देंगे कि उनके पास दौलत तो रहेगी, लेकिन राष्ट्रीय या क्षेत्रीय गौरव का मान नहीं होगा। समृद्धि और सम्मान अब सिर्फ पश्चिम की चीज रह जाएंगे।

आज अमेरिकी गौरव लौटाने (मेक अमेरिका ग्रेट अगेन) के दावे के साथ राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प जो कुछ कर रहे हैं उसमें भी कहा जा सकता है कि यह 'चौबेजी' के 'छब्बेजी' बनने की आकांक्षा में 'दुबेजी' बनकर लौटना साबित होगा। सीमा शुल्क की दरों में अतार्किक बढ़ोत्तरी के बाद दुनिया में जो क्रिया-प्रतिक्रिया हो रही है और अमेरिका जिस तरह प्रभावित हो रहा है उससे साफ लगता है कि यह संकट जब भी खत्म होगा अमेरिका अपनी पुरानी या वर्तमान हैसियत से छोटा होकर ही लौटेगा।

एक ओर ट्रम्प सैकड़ों देशों के 'गिड़गिड़ाने,' अर्थात् सीमा-शुल्क की दरों में कमी करके अमेरिका से संबंध सुधारने की पेशकश का दावा कर रहे हैं, तो दूसरी ओर इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों समेत महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सीमा-शुल्क की वृद्धि को नब्बे दिनों के लिए स्थगित करने का फैसला भी करते हैं। उनके सामने डटकर खड़ा चीन इतने पर भी नहीं मान रहा है। उसने न सिर्फ अमेरिकी सामानों पर जबाबी सीमा-शुल्क बढ़ाया है, बल्कि अपने यहां से अमेरिका को होने वाले खास निर्यात को भी रोक दिया है। इससे अमेरिका के वे बहुमूल्य उत्पाद प्रभावित होंगे जो सत्तर से अस्सी फीसदी चीनी पुर्जों या सेवाओं पर निर्भर हैं।

फैसले के बाद काफी सारी चीजों पर की गई

सीमा-शुल्क बढ़ोत्तरी को रोकने का फैसला अकेले चीन की जबाबी कार्रवाई के चलते नहीं किया गया है। चीन समेत कई देश विरोध वाले हैं तो वियतनाम जैसे देश पूरा समर्पण करने वाले भी हैं। अपना भी हाल लगभग वही है, पर यह विषय ही हमारी प्राथमिकता से दूर है। हमारी शासक जमात अभी वक्फ के बहाने मुसलमानों को 'ठीक' करने में जुटी है। बढ़ोत्तरी रोकने की असल वजह अमेरिकी वित्त-बाजार में आया भूचाल था जिसने एक दिन में ही हमारे 'सकल घरेलू उत्पाद' (जीडीपी) की तीन गुनी रकम भस्म कर दी थी। अगले दिन सरकारी फैसले के बाद बाजार वापस उमड़ा, लेकिन पुरानी स्थिति से काफी नीचे रहा।

अमेरिकी सरकारी बांड और वित्तीय उपकरणों को दुनिया का सबसे सुरक्षित निवेश माना जाता है। सन् 2008 के बाद एक बार फिर दुनिया अमेरिकी सरकारी वित्तीय उपकरणों पर शक करती नजर आती है। दूसरी तरफ सुरक्षित और फलदायी निवेश के लिए सोने-चांदी की खरीद भी बढ़ी है। अमेरिकी मुद्रा की गिरावट भी जारी है। पेट्रोलियम सस्ता होता जा रहा है और अमेरिकी समाज अचानक चीजें महंगी होने और अपना भविष्य देखकर चिंतित है। लोगों का सड़क पर आना जारी है।

मामला अमेरिका भर का नहीं है। अब अमेरिका वापस इस्पात, अल्युमीनियम और अन्य धातु, आटोमोबाइल-कार, इलेक्ट्रॉनिक सामान से लेकर जरूरत की हर चीज पैदा करने में फिर से पुराने दिनों जैसी स्थिति में आ जाए और अमेरिकी लोग फिर फैक्टरियों में काम ही न करें, बल्कि कंप्यूटर और साफ्टवेयर के काम में प्रवीण होकर अपना पूरा सिस्टम संभाल लें - यह कल्पना तो अच्छी है, लेकिन व्यावहारिक नहीं है। खुद अमेरिका ने अपने यहां मुख्य रूप से साफ्टवेयर, जैव-रसायन, दवा, बीज वगैरह का उत्पादन केंद्र बनाया है और रसायन से लेकर वे सारे उद्योग बाहर भेज दिए हैं जिनमें श्रम ज्यादा लगता है और प्रदूषण का खतरा है।

सन् 2021 में, जब जेलेन (जैनेट) येलेन अमेरिकी वित्तमंत्री बनी थीं तब उन्होंने ऐसे ही चुनिंदा उद्योगों की रखवाली का इंतजाम पुख्ता किया था। भूमंडलीकरण का अभियान भी इसी सोच से चला था। इससे यह भी होना ही था कि दुनिया को अपने उत्पाद और निवेश से पाटने की इच्छा के बावजूद अमेरिका और यूरोप के बाजार चीन और सस्ते, श्रम-प्रधान देशों के उत्पाद से पट गए।

आज अमेरिकी कदम से वहां का और दुनिया का नुकसान सबको समझ आता है, लेकिन चीन जैसे देशों पर उसका असर वैसा ही होगा। अगर अमेरिका और चीन, अर्थात दुनिया की दोनों प्रमुख अर्थव्यवस्थाएं प्रभावित होंगी तो दुनिया की अर्थव्यवस्था मंदी की चपेट में आये बगैर नहीं रह सकती। करों की यह दर बाजार की मांग घटाएगी, क्योंकि इससे सामान महंगे होंगे। अमेरिका की तो दिक्कत ही यह है कि अब उसके यहां ही नहीं, वैश्विक मामलों में आम तौर पर उसका साथ देने वाले यूरोप के पास भी न तो काम करने वाली आबादी है, न उसका पहले जैसा मानस ही बचा है।

चालाकी, व्यापार के अनुकूल नियमों, पूंजी-निवेश की पक्षपातपूर्ण नीतियों और फैसलों के साथ मानव आव्रजन के मामलों में भेदभाव उसके स्वभाव में शामिल हो गया है। अभी तक उसको समृद्धि और शान की आदत पड़ी है। यह चीज काफी कुछ उपनिवेशवाद और उसके बाद दुनिया में सौ साल से चल रही नीतियों का परिणाम है। अर्थशास्त्री उत्सा पटनायक का मानना है कि अंग्रेजों ने भारत पर अपने शासन के दौरान 45 ट्रिलियन डालर की लूट की थी। आज जितना भी कहा जाए, जुल्म किया जाए पर इस किस्म का अनर्थ तो नहीं ही चल सकता। इसलिए ट्रम्प की हरकतें अमेरिका और दुनिया को कहीं ले जा पाएंगी, यह दिखाई नहीं देता। (सप्रेस)

मुद्दा

राजीव खंडेलवाल

(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व बैतूल सुधार न्यास अध्यक्ष हैं)

नए वक्फ कानून पर 'अंतरिम निर्देश': सवाल तो उठ रहे हैं....

आधा गिलास खाली है अथवा भरा है।'' यह आपके विवेक पर निर्भर करता है कि आप आशावादी हैं या निराशावादी। शायद यही फॉर्मूला सुप्रीम कोर्ट ने वक्फ (संशोधन) अधिनियम 2025 जिसे संक्षिप्त में 'उम्मीद' कहा गया, पर हुई प्रारंभिक बहस पर लागू करते हुए इस मामले में 'अंतरिम आदेश तो नहीं परन्तु 'अंतरिम निर्देश' जरूर दिया है। एक तरफ उच्चतम न्यायालय वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 पर रोक लगाने से इनकार करता है, जो आमतौर पर सुनवाई की इस अवस्था में एक सामान्य प्रक्रिया होती है, दूसरी तरफ उसी सांस में उसके कुछ प्रमुख प्रावधानों को अगली सुनवाई तक लागू करने पर अंतरिम आदेश पारित किये बिना 'प्रभावी' भी रोक लगा देता है। इस प्रकार उक्त संशोधन अधिनियम को अगले आदेश तक अपंग हो जाता है। यानी कि 'रिंद के रिंद रहे हाथ से जन्नत न गई'। उच्चतम न्यायालय ने निम्न मामलों में यथा स्थिति बरकरार करने की बात कही है। प्रथम कोई वक्फ संपत्ति गैर अधिसूचित (डी नोटिफाई) नहीं होगी। दूसरी केंद्रीय वक्फ परिषद और बोर्डों में धारा 9 एवं 14 के अंतर्गत कोई नई नियुक्ति नहीं होगी ।

'वक्फ बाय यूजर' को संशोधन अधिनियम 2025 में हटा दिया गया है, जिस पर सबसे ज्यादा आपत्ति की गई है। चूंकि संशोधन अधिनियम पर उच्चतम न्यायालय ने रोक नहीं लगाई है, इसलिए यह धारा नए अधिनियम में न होने के कारण उसके प्रभाव को आगामी आदेश तक निष्प्रभावी न होने का अंतरिम निर्देश अटॉर्नी जनरल के आश्वासन के रूप में दिया है। मतलब कोई भी संपत्ति डी नोटिफाई नहीं होगी।

सुप्रीम कोर्ट ने अभी तक जो भी संसद द्वारा पारित कानून असंवैधानिक घोषित किए हैं, जैसा कि चुनावी बॉन्ड का, उनमें से किसी भी कानून को असंवैधानिक घोषित करने वाली याचिका सुनवाई हेतु स्वीकार करने के बाद सामान्यतया सभी याचिकाओं में पारित कानून के विरुद्ध स्थगन आदेश जारी नहीं किए हैं। लिहाजा संशोधन कानून 2025 को स्थगित कर दिया जाएगा, इसकी आशा न तो किसी वकील को थी और न ही ऐसी कोई मजबूत मांग उनकी तरफ से आई।

उच्चतम न्यायालय के इतिहास में शायद यह पहला मौका है, जब कोई याचिका संसद द्वारा पारित कानून को चुनौती देने के लिए प्रस्तुत की गई हो और उसकी प्राथमिक सुनवाई (सुनवाई हेतु स्वीकार किए जाने के लिए) के समय ही सुप्रीम कोर्ट याचिका की मेरिटस् पर ही तुरंत सुनवाई प्रारंभ कर देती है। ऐसे समय सामान्यतः याचिका सुनवाई हेतु स्वीकार की जाकर समस्त पक्षों को जवाब देने हेतु अगली सुनवाई का

नोटिस जारी करने के आदेश करती रही है। उच्चतम न्यायालय ने यहां अंतरिम आदेश तो नहीं, लेकिन अगली सुनवाई की तारीख तक केंद्रीय सरकार व राज्य सरकारों की तरफ से अटॉर्नी जनरल के आश्वासन को ही अंतरिम निर्देश का प्रभाव दे दिया है, जो सामान्यतः सुप्रीम कोर्ट करती नहीं है। क्या यह आश्वासन जबरन (फोर्स्ड कंसेंट) तो नहीं है? जो उच्चतम न्यायालय के द्वारा पूर्व दिवस हुई सुनवाई के दौरान कुछ मुद्दों को लेकर अंतरिम आदेश पारित करने के स्पष्ट संकेत देने के रिस्पांस में है? क्या यह उचित है कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा स्वयं आदेश पारित न कर मामले की एक पार्टी को कोर्ट की इच्छा के अनुरूप जबरदस्ती सहमति देनी पड़े। यह उच्चतम न्यायालय द्वारा तुरत फुरत की गई कार्रवाई और मामले की गंभीरता को भी दर्शाता है।

इस प्रकरण में जल्दी सुनवाई का एक कारण यह भी हो सकता है कि मुख्य न्यायाधीश 13 मई को सेवानिवृत्त हो रहे हैं। फिर भी 13 तारीख तक सुनवाई पूरी नहीं हो सकती। तब क्या नई बेंच गठित होकर पूरे मामले में फिर से सुनवाई होगी? यह एक बड़ा प्रश्न है। इस सुनवाई हेतु सुप्रीम कोर्ट के समस्त जज हिंदू है। जबकि श्री राम जन्मभूमि व बाबरी मस्जिद मामले में एक मुस्लिम जज भी थे। हालांकि यह सुप्रीम कोर्ट के आत्मविश्वास और निष्पक्षता को भी दर्शाता है। केंद्रीय संसदीय कार्य और अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरेन रिजिजू का इस सुनवाई के संबंध में दिया गया बयान कि 'कोर्ट विधायिका के मामले में दखल नहीं देगा। हमें एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए''। अगर सरकार न्यायपालिका में हस्तक्षेप करती है, तो यह उचित नहीं होगा'', अवांछनीय है। वह कहीं न कहीं अप्रत्यक्ष रूप से उच्चतम न्यायालय पर दबाव बनाने का प्रयास तो नहीं है? ठीक उसी प्रकार जैसे ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और जमीयत उलेमा ए हिंद के अध्यक्ष अरशद मदनी की यह धमकी है कि 'यदि फैसला पक्ष में नहीं आया तो आंदोलन किया जाएगा।' शायद इसी कारण सुप्रीम कोर्ट को हस्तक्षेप कर कहना पड़ा कि जब उच्चतम न्यायालय में सुनवाई चालू है, तब आंदोलन करने का औचित्य क्या है? अभी उपराष्ट्रपति ने 'जज सुपर संसद की तरह काम कर रहे है'', कहकर उच्चतम न्यायालय की अनुच्छेद 142 की शक्ति पर प्रश्न उठाया है। यद्यपि संविधान में विधायिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका के कार्यक्षेत्र की पृथक-पृथक स्वतंत्र व्यवस्था की है। परन्तु हमारी इस व्यवस्था में अक्सर यह प्रश्न उठता है कि क्या उच्चतम न्यायालय 'विधायिका' के ऊपर है, जब वह संसद द्वारा पारित कोई कानून अवैध घोषित कर देता है। इसी प्रकार जब विधायिका न्यायपालिका द्वारा पारित आदेश को शून्य बनाने के लिए नया कानून बनाती है, तब क्या विधायिका न्यायपालिका ऊपर हो जाती है? इसी प्रकार कोर्ट के लगभग 114 ऐसे निर्णय है, जिन्हे विधानसभा या संसद ने 'पलटा' है।

अपनी जीत पर रोता मनुष्य

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

मानव हमेशा से ही विकास के रास्ते पर अग्रसर रहता है। वानर से मनुष्य तक के सफर में मानव जीवन ने विभिन्न पर कई कठिन चुनौतियों का सामना किया और उन पर विजय प्राप्त करते हुए एक विकासशील जीवन की राह बनाई।

जैसे हर आगे बढ़ते कदम के पीछे एक परछाई चलती है , ठीक वैसे ही मानव जीवन की हर उन्नति के पीछे प्रकृति के विनाश की गाथा भी लिखी जा रही थी। हम इस बात से अनजान की 18वीं सदी के मध्य में जीवाश्म ईधन का उपयोग शुरू हुआ तब ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ने से पृथ्वी का तापमान बढ़ने लगा। औधोगिक क्रांति के नाम पर हम खुद अपने ही हाथों से अपने काल का कारण बनने लगे। जिस विकास को हम क्रांति का नाम दे रहे थे, वही हमारे लिए मानसिक और शारीरिक तनाव का कारण बनने लगी।

मौसम के बदलते तापमान ने मानव जीवन पर अपना नकारात्मक प्रभाव डालना आरम्भ कर दिया है। बाढ़, सूख और जंगल में आग ऐसी अप्राकृतिक घटनाएं अब आम होने लगी है। कई जगहों पर तो तापमान वृद्धि और अनियमित वर्षा से कृषि उत्पादन में गिरावट आ रही है। यह किसी एक शहर या देश की कहानी नहीं बल्कि विश्व स्तर पर ग्लोबल वार्मिंग का बुरा असर देखा जा सकता है। अत्याधिक गर्मी के कारण हृदय और श्वास संबंधी समस्याएं भी बढ़ने लगी है। तापमान और वर्षा में परिवर्तन वेक्टर जनित रोगों के प्रसार को बढ़ाता है। निवारक उपायों के बिना , ऐसी बीमारियों से होने वाली मौतें बढने लगी है। ग्लोबल वार्मिंग का पर्यावरण पर भी पद रहे प्रभाव के कारण बर्फ और ग्लेशियर के पिघलने के साथ-साथ समुद्र स्तर में वृद्धि और जैव विविधता का नुक्सान हो रहा है।

मानव निर्मित कारणों में जीवाश्म ईधन का जलना (कोयला, तेल और गैस) औद्योगिकरण और शहरीकरण, वनों की कटाई हमारे ही लिए हानिकारक सिद्द हो रहे है।

जरा सोचिए की अगर आज हम तापमान से इतना परेशान हो रहे है, तब हमारी आने वाली पीढ़ियों को किस कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है?

पहले जब हम प्रगति की और कदम बढ़ा रहे थे, तब हम नहीं जानते थे कि हम किस परेशानी में घिरने वाले है। प्रकृति का मजाक उड़ाते-उड़ाते हम खुद ही मजाक बनकर रह गए है। यह आने वाले समय के लिए एक चुनौती है, कि क्या हम सामान्य जीवन प्रकृति की देखरेख में जी सकेंगे या यह एक सपना बनकर रह जाएगा।

जैसे हर समस्या का समाधान होता है ठीक वैसे ही इस समस्या का भी समाधान है। यदि हम ऊर्जा की बचत, पानी की बचत और पर्यावरण पर विशेष ध्यान दें,तो ग्लोबल वार्मिंग के खतरे को हम टाल सकते है। व्यक्तिगत तौर के साथ-साथ सरकारी और वैश्विक स्तर पर भी प्रयास करने होंगे। कार्बन कैप्चर और स्टोरेज के साथ-साथ टिकाऊ कृषि तकनीकों को अपनाकर ग्लोबल वार्मिंग के तकनीकी समाधानों को खोजा जा सकता है।

हम कभी सफल होने के सपने देखते थे और अपने सपनों को पाने के लिए हमने बहुत संघर्ष भी किया है। लेकिन अफ़सोस की जीत की जिस खुशी को हम नाच-गाकर एक उत्सव की तरह मनाना चाहते थे, उसी सफलता ने मानव जाति को रोने पर विवश कर दिया है, लेकिन यह आसूँ खुशी के नहीं बल्कि पछतावे के आंसू है। जिस प्रकृति ने हमें जीवन दिया हम अहंकार में उसी की बली चढाने के लिए तैयार हो गए। आज हाल यह है कि हम अपने ही जीवन पर रो रहे है और उसी प्रकृति से मानव जीवन को बचाने की गुहार कर रहे है। जब जीत हमारे ही पतन का कारण बनने लगे तब सतर्क हो जाए। अपने लिए ही नहीं बल्कि अपनों के लिए भी एक सुखद भविष्य को तैयार करने के लिए हमें आज से फिर एक नई क्रांति की शुरुआत करनी होगी, जिसका ध्येय मात्र विकास नहीं बल्कि प्रकृति और मानव जाति को एकसाथ मिलाकर चलने का प्रयास भी हो।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) -विनोद तिवारी
कार्यकारी प्रधान संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

डॉ. प्रेमचंद द्वितीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

सुनने वालों की कीमत तुम क्या जानो सम्मेलन वालों

कस्बे में हुए कवि सम्मेलन में कवियों से मंच तो सज गया लेकिन श्रोता की कमी ने कवि सम्मेलन की बाट लगा दी और कवि सम्मेलन बगैर श्रोताओं के मात्र कवि मिलन और कवि फलन बनकर समाप्त हो गया। कवि सम्मेलन के फ्लॉप होने पर कवियों को कोई मलाल नहीं हुआ, उन्हें बगैर सुनाएं माल मिल गया! और सरकारी आयोजक ने बिल लगाकर अपनी विल पूरी कर ली।

फ्लॉप कवि सम्मेलन में बगैर कविता सुन पंडित शिवनारायण जी सुबह-सुबह घर आए और बोले रात 3 बजे तक कवि सम्मेलन सुनने की ललक से गया था लेकिन अन्य सुनने वालों की कमी से कवि सम्मेलन पारिश्रमिक देने में ही सिमट गया और कवि सम्मेलन बगैर श्रोता के सन्नाटा सम्मेलन में तब्दील हो गया।

पंडित जी बोले उम्र के इस पड़ाव पर सुनने वालों का टोटा हो जाता है, मैंने अमेरिका से बेटे से सुनने की मशीन कानों में लगाने के लिए इसलिए बुलवाई की जिंदगी भर सुन सुन कर जिनके कान डेसीबल से डिसेबल हो गए हैं वे सुनने के एबल हो जाए। हालांकि जिंदगी भर गोष्ठी, सभा, मीटिंग, कथा, प्रवचन, सम्मेलन ,सुनने में मैंने समय ही जाया नहीं किया। रहस्य की बातें इन कानों ने सुन सुन कर सुनने वालों के कानो को सुन्न कर दिया और लोग मुझसे कहने लगे की रहस्य की बातों को सुनने की आर्ट सीखना है तो पंडित जी से सीखिए।

वे बोले समस्याएं श्रोताओं की है, विशेषकर साहित्य के श्रोताओं की! साहित्य के कार्यक्रम में मंच साहित्यकारों से भर जाता है और श्रोताओं के न होने से खाली कुर्सियों रहने से कुर्सियां खुद तो सिमट जाती है और कार्यक्रम को भी समेट देती है।

वे बोले वैसे कई कवि सम्मेलनों का क्रेज श्रोताओं ने फ्रिज कर दिया है। जब सोशल मीडिया नहीं था तब कवि सम्मेलन सुनने के लिए जगह नहीं मिलती थी लेकिन सोशल ने ऐसा छल किया कि कवि सम्मेलन में कवि ही कांव कांव करते है और श्रोता सम्मेलन को बाय-बाय कर घर चले जाते हैं।

वे बोले पहले पहले कवि सम्मेलनों में सुनने वाले कवियों को हुट करते थे अब कवि सम्मेलनों को हुट की जगह, हिट कर देते हैं ।कवियों पर श्रोता फब्ती कसते थे। टांट करते थे। यहां तक कि श्रोता कवि की टांग खींचकर मात्रा पारिश्रमिक तक सीमित कर देते थे और सुबह तक चलने वाले कवि सम्मेलन अपनी छाप छोड़ जाता था अब तो श्रोताओं के टोटे ने कवि और सम्मेलनों दोनों को टॉय टॉय फीस कर दिया है।

पंडित जी बोले सम्मेलन करने वालों को सुनने वालों की कीमत समझना होगी। श्रोताओं के पास सुनने का टाइम नहीं है। इस पर सुनील भैया बोले श्रोताओं ने अपने कान अब दीवारों से लगा दिए हैं जब से यह मुहावरा सुना कि दीवारों के भी कान होते हैं इसलिए श्रोता अपने कानों से कोई बात न सुनकर दीवारों को सुनाते है क्यों कि दीवारों के कान श्रोताओं के कानो से ज्यादा रहस्य की बात सुनने का पावर रखती है। दीवारों के कान कानाफूसी सुनकर हड़कंप, हलचल और खलबली मचा देते हैं। दीवारों के पास मुंह,आंख,नाक नहीं होते हैं मात्र कान होते हैं जो रहस्य की बात सुनकर बवाल मचा देती है।

इस पर मनोज जी बोले साहित्य हो या सभा, प्रहसन हो या प्रवचन, मंचन हो या नाट्य हो, कथा हो या व्यथा, आंदोलन हो या संचलन, रैली हो या जुलूस जलसा, बैंड बाजे हो या ढोल ताशे, या धमाकेदार डीजे हो इन सब की कर्कश और सुरीली आवाज हो और यदि उन्हें सुनने वाला नहीं है तो यह सुरीलापन कसेलापन में बदल जाता है।

इसीलिए तो आजकल कहने लगे हैं कि श्रोता इंपॉर्टेंट है उसकी मर्जी होती है तो वह सुने ना सुने, सम्मेलनों को सक्सेस करने के लिए जिनके कान डिसएबल हो गए हैं उन्हें कानो की मशीन दिलाकर कार्यक्रम में बिठाआ,जिनके कान बहुत तेज है और उनका ध्यान भटकता है तो उनका ध्यान केंद्रित करने के लिए उन्हें श्रोता की जगह वक्ता बनाओ ताकि वह कार्यक्रम को सुनने में दिलचस्पी ले। मामूली श्रोता को अध्यक्षता, स्वागत भाषण, संचालन, व्यक्तव्य देने के लिए अथवा आभार प्रकट करने का लालच देकर उन्हें उलझा रखो। वैसे भी श्रोताविहीन कार्यक्रम अंतिम कार्यक्रम जैसा ही होता है जिसमें केवल सन्नाटा पसरा रहता है। इसीलिए सुनने वालों की कीमत तुम क्या जानों! सम्मेलन वालों कह कर पंडित जी ने घर की राह पकड़ ली!

विश्व पुस्तक दिवस

प्रो. नीलिमा गुप्ता

(कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विवि, सागर)

व्यक्तित्व और सक्षम नागरिक के लिए पुस्तकें जरूरी

एक दशक पहले के आँकड़े के अनुसार प्रति वर्ष 54.6 प्रतिशत वयस्क पुस्तकें पढ़ा करते थे, पिछले 5 वर्ष के आंकड़ों में यह 52.7 प्रतिशत है तथा वर्तमान में 48.5 प्रतिशत वयस्क पुस्तक पढ़ते हैं। जहां एक ओर साक्षरता दर बढ़ी, वहीं दूसरी और पुस्तक पढ़ने की निरंतर घटती हुई संख्या चिंताजनक है। यह आवश्यक है कि पुस्तकों के प्रति एक जागरूकता अभियान चलाया जाए जिससे हम समाज को शिक्षित, सुयोग्य एवं समर्थ बना सकें।

मनुष्य के जीवन में पुस्तकों की भूमिका और महत्व हमेशा से रहा है। एक बालक पुस्तक से ही अक्षर पहचानना और गिनती सीखता हैए एक छात्र पुस्तक पढ़कर ही डिग्री पाता है। डॉक्टर, वकील तथा अन्य क्षेत्रों के पेशेवर पुस्तकों के माध्यम से ही अपने ज्ञान और पेशे में वृद्धि करते हैं। यह पुस्तकें ही हैं जो लम्बे सफर में हमारा मनोरंजन करती हैं और हमें चरित्र निर्माण, भारतीय मूल्य और व्यक्तित्व विकास के बारे में जानकारी देती हैं। ज्ञान की प्यास पुस्तकें ही बुझाती हैं। पुस्तकें ज्ञान की खोज के सच्चे साथी हैं। पुस्तकें व्यक्ति के जीवन में रंग भरकर भविष्य को आकार देती हैं। यह ज्ञान की दुनिया के प्रवेश द्वार हैं। पिछले कुछ वर्षों में लोग धीरे-धीरे पुस्तकों से हटकर डिजिटल दुनिया की तरफ आकर्षित होते गए। वेद-पुराण, विश्वकोश, शब्दकोश, एटलस, रेड डाटा बुक आदि बुक शेल्फ और पुस्तकालयों की शोभा बनकर रह गए।

व्यावसायिक युग में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण लोगों के पास समय की कमी है। इसके कारण इंटरनेट, मोबाइल तथा डिजिटल साधनों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है और पुस्तकें धीरे-धीरे उपेक्षित होती गईं। आज डिजिटल पुस्तकालयों का विकास हो रहा है और पुस्तकें, जो किसी भी राष्ट्र की संस्कृति और ज्ञान का प्रतीक होती हैंए वह पुस्तकालयों में अनछुई सी रह गईं। पुस्तकालयों में पुस्तक पढ़ने वाले लोग कम होते जा रहे हैं। ज्ञान से परिपूर्ण यह पुस्तकें पढ़ने वालों का इंतजार ही कर रही हैं। उपलब्ध आंकड़ों के हिसाब से अमेरिका में एक व्यक्ति लगभग 17 पुस्तक प्रतिवर्ष पढ़ता है, एक भारतीय 16 पुस्तक, यूनाइटेड किंगडम में यह आंकड़ा 15 पुस्तक तक है। फ्रांस में एक व्यक्ति औसतन 14 पुस्तक और इटालियन 13 पुस्तक प्रति वर्ष पढ़ते हैं। ये देश क्रमशः 357, 352, 343, 305 तथा 278 घंटे प्रति वर्ष पढ़ने में बिताते हैं। सबसे कम आंकड़े अफगानियों के हैं। यहाँ प्रति व्यक्ति आंकड़ा 2.56 पुस्तक प्रति वर्ष का है और ये 58 घंटे प्रति वर्ष पढ़ने में बिताते हैं।

सन् 1995 में यूनेस्को ने विश्व पुस्तक दिवस की घोषणा की थी और तब से निरन्तर 23 अप्रैल को अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक दिवस मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य वाचन और पुस्तकों के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाना, पुस्तक प्रकाशन और कापी राइट के महत्व को समझना तथा लेखकों और पुस्तकालयों की भूमिका को उजागर करना है।

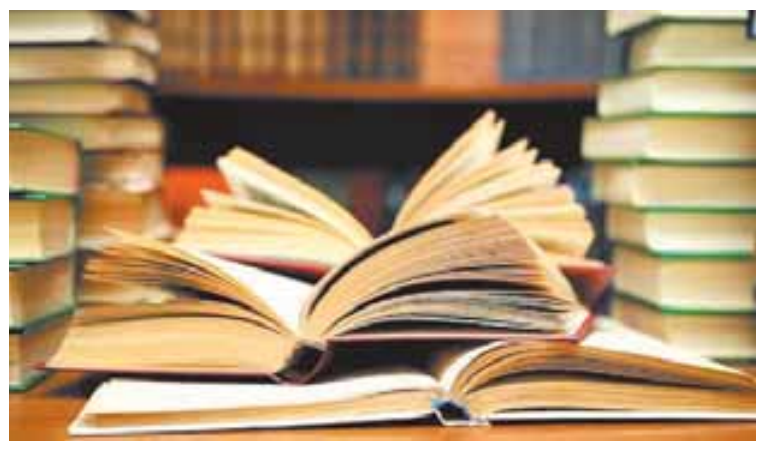

भारत में भी विश्व पुस्तक दिवस 23 अप्रैल को मनाया जाता है। इस वर्ष की थीम है 'अपने तरीके से पढ़ें।' इसका उद्देश्य बच्चों में नैसर्गिक और मनोरंजक तरीके से सीखने के लिए प्रेरित करना है। हर आयु और वर्ग के मनुष्य के जीवन में पुस्तकें अहम भूमिका निभाती हैं। यह हमारे जीवन को समृद्ध बनाने में मदद करती हैं, जिससे हमारा व्यक्तित्व का पूर्ण विकास सम्भव है।

यह हमें ज्ञान, जानकारी और अनुभव प्रदान करती हैं, जो हमारे व्यक्तिगत और पेशेवर विकास में सहायक हैं। जहाँ एक ओर पुस्तकें बच्चों के लिए शिक्षा और ज्ञान का आधार हैं तथा वे उनमें कल्पनाएं सृजनात्मकता तथा नैतिक मूल्यों का विकास करती हैं, वहीं विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम की तैयारी, गहरे ज्ञान, जानकारी तथा शोध और अनुसंधान में सहायक हैं। पेशेवरों के लिए पुस्तकें ज्ञान और जानकारी के साथ-साथ उनके पेशेवर विकास तथा नेटवर्किंग और सम्पर्क के माध्यम से अन्य पेशेवरों से जुडने और नेटवर्किंग में मदद करती हैं। आम जनता के लिए पुस्तकें मनोरंजन का साधन, ज्ञान और जानकारी प्रदान करती हैं तथा व्यक्तिगत विकास में मदद करती हैं।

पुस्तकें समाज में शिक्षा और संस्कारों का प्रसार करने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य करती हैं। यह केवल पढ़ाई का माध्यम ही नहीं है, बल्कि यह सामाजिक विकास और विचारशीलता को भी बढ़ावा देती हैं। पुस्तकालय केवल किताबों का संग्रह नहीं, बल्कि एक ऐसा मंच है जो ज्ञान और सोच को निरंतर आगे बढ़ाता है। इससे समाज का समग्र विकास होता है। इस अंतराष्ट्रीय पुस्तक दिवस पर हम संकल्प लें कि ज्ञान से परिपूर्ण इन पुस्तकों को पढ़कर एक सृजनात्मक सोच का विकास करेंगे और अपने जीवन में पूर्णता लाने का प्रयास करेंगे। हम भी पढ़ें और दूसरों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें। पुस्तकें पढ़ें, ज्ञान बढ़ाएं, पढ़ने की आदत डालें, ज्ञान के भंडार की पुस्तकों से ज्ञान की शक्ति बढ़ाएं और अपने जीवन को समृद्ध बनाएं।

पुस्तकें हमारा जीवन हैं। इन्हें पढ़े और आत्मविश्वास बढ़ाएं। पुस्तक पढ़ने में अभिरूचि पैदा करने से मनुष्य के जीवन में अनेक रंग स्वतः भर जाते हैं। आवश्यक है कि हम इस अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक दिवस पर पुस्तकों के प्रति जागरूकता फैलाएं और सभी वर्ग के लोगों को पुस्तक पढ़ने के लिए प्रेरित करें जिससे पुस्तकों द्वारा समाज को एक नया दृष्टिकोण और आत्मविश्वास मिल सके। इसी समाज का शिक्षित, योग्य, सक्षम एवं समर्थ नागरिक राष्ट्र ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में अपनी एक नई पहचान बना सके।

पुण्यतिथि

चेतनादित्य आलोक

वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार, स्तंभकार एवं राजनीतिक विश्लेषक

हिंदी में राष्ट्र जागरण के अग्रदूत पंडित माधव राव सप्रे

हिन्दी भाषा को जिन कुछेक अहिन्दी भाषी शारदा पुत्रों ने अपने प्रेम, परिश्रम एवं प्रज्ञा से सींचा और संवर्द्धित किया, उनमें एक प्रमुख नाम मराठी भाषी पंडित श्री माधव राव सप्रे (19 जून सन् 1871-23 अप्रैल 1926) का भी है, जिन्हें न तो वाराणसी जैसा समृद्ध बौद्धिक चेतना संपन्न शहर ही मिला था और न ही 'सरस्वती' जैसा अत्यंत समृद्ध और लोकप्रिय मंच। इसके बावजूद जीवन के अत्यंत कठोरसंघर्षों में तपकर निकलने वाले 'हिंदी नायक' माधव राव सप्रे की उपलब्धियों की स्मृतियां आज भी हमें प्रेरित करती हैं। उन्होंने हमें सिखाया था कि छोटी-सी आयु में भी जीवन को सार्थक कैसे बनाया जा सकता है। दरअसल, उनकीपूरीजिंदगी ही एक ऐसा पाठ है, जो हमें कभी भी हार नहीं मानना और लगातार जूझते रहना सिखाती है। बता दें कि सप्रे जी ने पहले तो एक बहुत छोटे स्थान पेंड्रा से 'छत्तीसगढ़ मित्र' नामक हिंदी पत्रिका की शुरूआत की और बाद में नागपुर से 'हिंदी केसरी' का प्रकाशन आरंभ किया। देखा जाए तो उनका समूचा व्यक्तित्व हिंदी की सेवा में समर्पित रहा है। वे कभी हार न मानने वाले तथा आध्यात्मिक उर्जा से लबालब भरे रहने वाले भारतवर्ष के एक ऐसे मानस पुत्र हैं, जिन्होंने अपनी मातृभूमि एवं पुण्यभूमि के लिए सब कुछ निछावर कर दिया था। अपने सुखों को त्यागकर जीवन भर भारत माता और उसके पुत्रों के लिए कई स्तरों पर जूझते रहने वाले सप्रे जी यदि आज हमारे मध्य सशरीर मौजूद रहते तो 154 वर्ष के होते।

सप्रे जी ने मात्र 54 वर्षों की जीवनावधि पाई थी, किन्तु यदि राष्ट्र, राष्ट्रभाषा, हिन्दी भाषा और साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके योगदानों का अवलोकन किया जाए तो ये 54 वर्ष 154 वर्ष जैसे प्रतीत होते हैं। गौरतलब है कि बिलासपुर से मिडिल स्कूल तथा शासकीय विद्यालय रायपुर से मैट्रिक की पढ़ाई पूरी कर सन् 1899 में कोलकाता विश्वविद्यालय से बीए में उत्तीर्ण होने के बाद उन्हें तहसीलदार की शासकीय नौकरी मिल गई थी, लेकिन मन में उठने वाले राष्ट्रभक्ति के भावनात्मक उफानों के आगे उन्होंने अपनी नौकरी को अपेक्षित महत्व नहीं दिया... और लोक-जागरण के कार्यों में तन-मन-धन से जुट गए। बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी सप्रे जी साहित्य लेखन, संपादन, अनुवाद, संवाद एवं पत्रकारिता के अतिरिक्त विभिन्न राष्ट्रीय सामाजिक आन्दोलनों में अपनी सार्थक एवं उपयोगी सक्रियता के माध्यम से देश और समाज को निरंतर दिशा देते रहे। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी क्रम में सन् 1921 में रायपुर में उन्होंने राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की। बाद में रायपुर में ही 'जानकी देवी महिला पाठशाला' एवं 'रामदासी मठ' तथा जबलपुर में 'हिंदी मंदिर' की स्थापना भी उन्होंने की। शिक्षा के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए सप्रे जी ने एक बार कहा था- ''जिस शिक्षा से स्वाभिमान की वृत्ति जागृत नहीं होती, वह शिक्षा किसी काम की नहीं है।''

हालांकि, उनकी पत्रकारीय एवं साहित्यिक सेवा-यात्रा छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र की परिधि से ही संचालित होती रही, परन्तु उनका लक्ष्य-क्षेत्र संपूर्ण भारतवर्ष रहा। इस प्रकार,सप्रे जी परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़े भारतीय समाज में जीवन भर अपने चिंतन-लेखन के माध्यम से नवीन चेतना का संचार करते रहे। हिन्दी पत्रकारिता के शिखर पुरुष श्री सप्रे जी ने छत्तीसगढ़ के छोटे से स्थान पेंड्रा से जनवरी 1990 में 'छ्त्रीसगढ़ मित्र' नामक प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका की शुरूआत करके राष्ट्रभाषा, समाज और संस्कृति के उन्नयन और संवर्द्धन में अपनी महती भागीदारी सुनिश्चित की। हालांकि आर्थिक कठिनाइयों के कारण लगभग तीन वर्षों में ही उनको यह पत्रिका बंद करनी पड़ी, लेकिनबत्तीस पृष्ठों वाली विशिष्ट सामग्रियों से परिपूर्ण उक्त पत्रिका की सर्वत्र प्रशंसा होती रही।उस समय देश भर में प्रतिष्ठित कोलकाता से प्रकाशित प्रमुख अखबार 'भारत मित्र' ने लिखा-''इस पत्र के संपादक एक महाराष्ट्रीयन हैं, तथापि हिंदी बहुत शुद्ध लिखते हैं। लेख भी बहुत अच्छे होते हैं। हम आशा करते हैं कि मध्यप्रदेश वासी इस पत्र को बनाए रखने की चेष्टा करेंगें।''छत्तीसगढ़ मित्र के बंद होने के बाद सप्रे जी ने लोकमान्य बाल गंगाधर 'तिलक' की पत्रिका 'मराठी केसरी' से प्रभावित होकर13 अप्रैल 1907 को 'हिंदी केसरी' नामक पत्रिका का प्रकाशन आरंभकिया था।

हिंदी केसरी के प्रकाशन तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में सप्रे जी के परिश्रम, लगन एवं निष्ठा से प्रभावित होकर हिन्दी के अद्वितीय साहित्यकार, पत्रकार एवं अप्रतिम संपादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपनी 'सरस्वती' पत्रिका के मई 1907 के अंक में सप्रे जी की सराहना करते हुए लिखा-''हिंदी केसरी निकल आया। अच्छा निकाला। ...आशा है, इस पत्र से वही काम होगा जो तिलक महाशय के मराठी पत्र से हो रहा है। इसके निकालने का सारा पुण्य पंडित माधवराव सप्रे बी.ए. को है। महाराष्ट्री होकर भी हिंदी भाषा पर आपके अखंड और अकृत्रिम प्रेम को देखकर उन लोगों को लज्जित होना चाहिए, जिनकी जन्म-भाषा हिंदी है, पर जो हिंदी में एक सतर भी नहीं लिख सकते, अथवा न ही लिखना चाहते हैं।''राष्ट्रभाषा हिन्दी में पनप रही विकृतियों तथा भाषा के स्वरूप एवं विकास के संदर्भ में सप्रे जी की चिन्ता से भला कौन अवगत नहीं, फिर भी 'छत्तीसगढ़ मित्र' के प्रवेशांक में प्रकाशित उनके विचार सभी को पढ़ने चाहिए- ''आजकल भाषा में बहुत-सा कूड़ा-करकट जमा हो रहा है, वह न होने पावे इसलिए प्रकाशित ग्रन्थों पर प्रसिद्ध मार्मिक विद्वानों के द्वारा समालोचना भी की जानी चाहिए।''

सप्रे जी ने मात्र 54 वर्षों की जीवनावधि पाई थी, किन्तु यदि राष्ट्र, राष्ट्रभाषा, हिन्दी भाषा और साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके योगदानों का अवलोकन किया जाए तो ये 54 वर्ष 154 वर्ष जैसे प्रतीत होते हैं। गौरतलब है कि बिलासपुर से मिडिल स्कूल तथा शासकीय विद्यालय रायपुर से मैट्रिक की पढ़ाई पूरी कर सन् 1899 में कोलकाता विश्वविद्यालय से बीए में उत्तीर्ण होने के बाद उन्हें तहसीलदार की शासकीय नौकरी मिल गई थी, लेकिन मन में उठने वाले राष्ट्रभक्ति के भावनात्मक उफानों के आगे उन्होंने अपनी नौकरी को अपेक्षित महत्व नहीं दिया... और लोक-जागरण के कार्यों में तन-मन-धन से जुट गए। बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी सप्रे जी साहित्य लेखन, संपादन, अनुवाद, संवाद एवं पत्रकारिता के अतिरिक्त विभिन्न राष्ट्रीय सामाजिक आन्दोलनों में अपनी सार्थक एवं उपयोगी सक्रियता के माध्यम से देश और समाज को निरंतर दिशा देते रहे।

हिन्दी के प्रति अपने प्रेम और सम्मान को स्वयं सप्रे जी ने भी एक बार प्रकट करते हुए कहा था- ''मैं महाराष्ट्री हूं, पर हिंदी के विषय में मुझे उतना ही अभिमान है, जितना कि किसी हिंदीभाषी को हो सकता है।''दरअसल, सप्रे जी राष्ट्रभाषा हिन्दी को एक सबल-सशक्त भाषा के रूप में देखना चाहते थे, जो राष्ट्र, भाषा और संस्कृति का सशक्त संवाहक बन सके तथा उनकी सार्थक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करने में सक्षम हो। राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपनी भावप्रवण लेखन शैली से समृद्धिएवं लोकप्रियता प्रदान करने वाले पंडित माधव राव सप्रेका साहित्यिक एवं आध्यात्मिक अवदान भी अतुलनीय है। बता दें किउन दिनों देश भर से प्रकाशित होने वाले प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में उन्होंने विविध विषयों पर सैंकड़ों लेख, कहानियां एवं समीक्षाएं इत्यादि लिखीं। सन् 1968 में महान कथाकार कमलेश्वर के संपादकत्व में प्रकाशित होने वाली 'सारिका' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका में सप्रे जी की कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' हिंदी की पहली कहानी घोषित की गई थी।

इसी प्रकार,सप्रे जी ने अनुवाद के द्वारा भी हिन्दी भाषा को भरपूर समृद्धि दिलाई। एक अनुवादक के रूप में उन्होंने जिन कुछ महान कृतियों को अन्य भाषाओं से हिन्दी में सानुवाद प्रस्तुत किया, उनमें समर्थ गुरू स्वामी रामदास जी द्वारा रचित 'दासबोध' प्रमुख है, जो कि एक अनुपम कृति है। इनके अतिरिक्त उन्होंने चिंतामणि विनायक वैद्य द्वारा रचित महाभारत के 'उपसंहार' का 'महाभारत मीमांसा' नाम से तथा लोकमान्य तिलक द्वारा रचित 'गीता रहस्य' के अतिरिक्त 'शालोपयोगी भारतवर्ष', 'दत्त-भार्गव संवाद', श्री राम चरित्र, एकनाथ चरित्र तथा आत्म विद्या जैसे मराठी ग्रंथों का अनुवाद भी किया, जिन्हें पढ़ना हिन्दी जगत के पाठकों के लिए सौभाग्य की बात है। सप्रे जी द्वारा रचित कृतियों में स्वदेशी आंदोलन और बॉयकॉट, यूरोप के इतिहास से सीखने योग्य बातें, हमारे सामाजिक ह्रास के कुछ कारणों का विचार एवं माधवराव सप्रे की कहानियां प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं। सारांशतः भारत माता ग्रामवासिनी की बहुविध सेवा में आजीवन रत रहने वाले अप्रतिम राष्ट्रसेवी सप्रे जीहिंदी में राष्ट्रजागरण के अग्रदूत थे।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

मुकेश नागर

(सामयिक विषयों के लेखक)

बेरोजगारी का खतरा और नई संभावनाएं भी

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से आने वाला संकट केवल भारत के लिए नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के मुहाने यह संकट खड़ा है। सभी देश अपने-अपने देश के रोजगार बचाने की कवायद में जुट गए। कम्प्यूटर आने के बाद व्यापार-व्यवसाय पर जो असर पड़ा था, वह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के पड़ने वाले असर के मुकाबले बहुत कम था। एआई से रोजगार पर आक्रमण का खतरा सभी देशों पर समान रूप से मंडरा रहा है। एआई का क्षेत्र भी रोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराएगा। एआई के क्षेत्र में भी रोजगार के अच्छे अवसर उपलब्ध रहेंगे।

एलन मस्क ने जो इस समय अमेरिकी राष्ट्रपति के मुख्य सलाहकार में से एक हैं, उन्होंने बीते दिनों बयान दिया कि अब समय आ गया है कि बेसिक इनकम को अनिवार्य कर दिया जाए, जिससे व्यक्ति अपने एवं अपने परिवार का पालन पोषण कर सके। क्योंकि, आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सभी नौकरियों के अवसर तेजी से खत्म कर देगा। उनके इस बयान ने पूरी दुनिया को चिंता में डाल दिया। अभी जब इसकी शुरुआत है, तब यह बात हम सभी को अविश्वनीय लग सकती है। पर, हम अपने अतीत में देखे तो हम एक से अधिक बार पहले भी अपने बहुत से व्यवसाय और नौकरी जो हमने शुरू किए थे वे बंद हो चुके और लोग दूसरे व्यवसाय की तरफ रुख कर चुके हैं।

पूर्व में कंप्यूटर तथा उसके बाद अभी कुछ सालों पहले मोबाइल फोन आने के बाद एसटीडी, पीसीओ, लैंडलाइन फोन, कोरियर पोस्ट, कैमरा, वीडियो, टेप रिकॉर्डर, कैसेट, घड़ी, किताबे जैसे कामकाज से सम्बन्धित कई व्यवसाय और इन सभी रोजगार में लगे अधिकांश व्यक्तियों को किसी अन्य व्यवसाय या नौकरी का रुख करना पड़ा। मोबाइल आने के बाद व्यापार-व्यवसाय पर जो असर पड़ा था, वह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के पड़ने वाले असर के मुकाबले बहुत कम था। अनुमान लगाया जा रहा है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का दायरा इतना विस्तृत और विशाल होगा कि काल सेंटर, कस्टमर सर्विस, डेटा एंट्री, एकाउंटिंग, ट्रांसलेशन, फाइनेंस, बैंकिंग, मेडिकल रिसर्च के अलावा अन्य कई ऐसे बड़े क्षेत्र हैं, जो बड़ी संख्या में रोजगार उपलब्ध कराते हैं ये सभी क्षेत्र एआई की गिरफ्त में होंगे। इन सभी क्षेत्रों के रोजगार लगभग एआई समाप्त कर खुद ही सारा काम करने लगेगा।

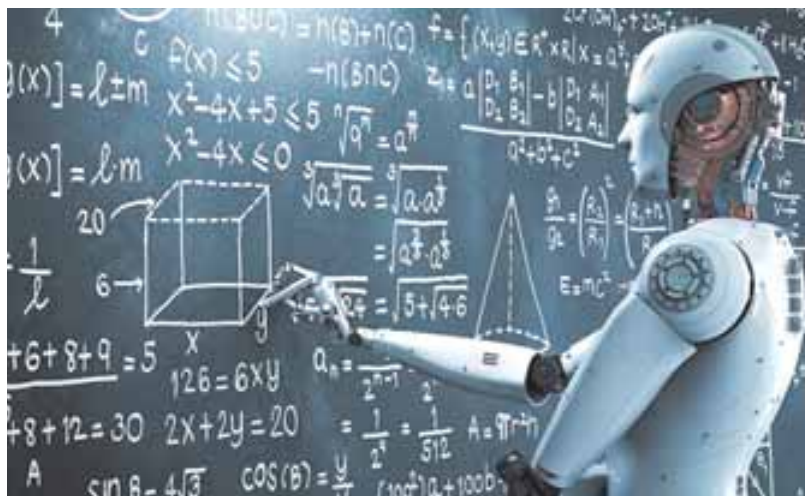

यह संकट केवल भारत के लिए नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के मुहाने यह संकट खड़ा है। सभी देश अपने अपने देश के रोजगार बचाने की कवायद में जुट गए। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप भी अपने देश के रोजगार बचाने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। जिससे अमेरिकी उद्योग धंधे चलते रहें और बंद न हों। ताकि अमेरिका में रोजगार की संभावनाएं तलाश रहे अमेरिकी लोगों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध रहे। एआई से रोजगार पर आक्रमण का खतरा सभी देशों पर समान रूप से मंडरा रहा है। कोई भी देश इस संकट से बच नहीं सकेगा। दुनिया के शेयर किंग वारेन बफेट का भी कहना है कि केवल कुछ ही क्षेत्र है जो एआई के प्रभाव से बचे रहेंगे।

हम यदि एआई से सुरक्षित रोजगार के क्षेत्र की ओर देखने की कोशिश करें, तो उनमें से एक है एनर्जी सेक्टर, रिनिवेबल एनर्जी सेक्टर जो सोलर पैनल को डिजाइन करते है। इन सोलर पैनल को डिजाइन करने में बहुत ज्यादा स्किल और अनुभव की आवश्यकता होती हैं और यह काम एआई मशीन के बजाय मानव मस्तिष्क से ज्यादा अच्छी तकनीक के साथ किया जा सकता है अतः रिनिवेबल एनर्जी इंजीनियर को भी एआई से अधिक खतरा नहीं है। दूसरा सेक्टर है बायोलॉजिकल सेक्टर। हेल्थ सेक्टर के क्षेत्र में काम करने वाले हेल्थ प्रैक्टिशनर डॉक्टर, नर्स है, जो पारम्परिक चिकित्सा के साथ साथ इमोशनली भी बीमारी का इलाज करते हैं। कुछ बीमारियों का इलाज भावनात्मकता से ज्यादा अच्छे से किया जा सकता है यह काम एआई आसानी से नहीं कर सकेगा।

इसके बाद एक और क्षेत्र है बायोमेडिकल रिचर्स का क्षेत्र का इस क्षेत्र में भविष्य में होने वाली कोई नई कोविड जैसी अन्य बीमारियों का इलाज खोजेंगे। नए-नए अनुसंधान कर नवीन वैक्सीन द्वारा मानव जीवन को बचाने में अपना योगदान देंगे। इसके लिए अनुभवी डॉक्टर ही चाहिए। जिस तरह से दुनिया युद्ध के मुहाने खड़ी है। उत्तरी कोरिया, चीन, ईरान, फिलिस्तीन जैसे देश जो कभी भी बायोलॉजिकल हथियार का उपयोग कर नई नई बीमारियां फैलाने को तैयार बैठे हैं, तब इस तरह की रिसर्च की आवश्यकता होगी। अतः इस क्षेत्र के लोग एआई के प्रभाव से अछूते रहेंगे।

एआई का क्षेत्र भी रोजगार के नए नए अवसर उपलब्ध कराएगा। एआई खुद एक सॉफ्टवेयर है और समय-समय पर इसको भी अपडेट करना पड़ेगा। एआई के क्षेत्र में भी रोजगार के अच्छे अवसर उपलब्ध रहेंगे। इतना सारा डेटा सॉफ्टवेयर में रखा जाएगा कि उसकी सुरक्षा के लिए साइबर सिक्योरिटी की भी जरूरत होगी और दुनिया में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के स्थान पर एआई इंजीनियर की अधिक आवश्यकता का अनुमान है। बाकी अन्य क्षेत्रों में धीरे-धीरे रोजगार कम होते जाएंगे और पूरी दुनिया के सामने सबसे बड़ा संकट रोजगार का होगा कि कैसे अपने देश में रोजगार उपलब्ध कराए जाएं। परम्परागत रोजगार को कैसे बचाया जाए और यदि रोजगार बचा भी लिए तो कैसे उनमें से पर्याप्त आय प्राप्ति सुनिश्चित की जाए। इन सभी सवालों का जवाब भी आने वाला समय ही देगा।

रैली निकालकर शिक्षा के प्रति जागरूकता अभियान चलाया

बैतूल / भौंरा। जनजाति कार्य विभाग मध्य प्रदेश शासन और मैजिक बस इंडिया फाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान में सक्षम जीवन कौशल कार्यक्रम के अंतर्गत शाहपुर ब्लॉक के शासकीय माध्यमिक शाला भौंरा में स्कूल चले हम अभियान के तहत रैली निकाली गई। इस आयोजन में शाला प्रभारी,

शिक्षक, समुदाय के सदस्य, एसएमसी सदस्य और स्कूल के बच्चे और सक्षम प्रोग्राम से मीना सातनकर और विद्या रैकवार उपस्थित रहे। स्कूल चले अभियान कि जानकारी दी, शिक्षा के महत्व को समझया। गांव के विकास में बच्चों का शिक्षित होना जागरूक होने से समुदाय का विकास कैसे होगा, बताया गया। साथ ही ब्लॉक मैनेजर मीना और विद्या ने कहां सभी बच्चों को स्कूल नियमित रूप से भेजें और समुदाय में जो बच्चों ने एडमिशन नहीं लिया है, उनका एडमिशन करवाये। रैली के माध्यम से समुदाय के लोगों को जागरूक किया।

आरपीएफ ने चलाया महिला सुरक्षा जागरूकता अभियान

बैतूल। मध्य रेलवे नागपुर अंतर्गत बैतूल रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) नगर के स्कूल, कॉलेजों के अलावा स्टेशन एवं ट्रेनों में महिला सुरक्षा को लेकर जागरूकता अभियान चलाकर जानकारी दे रहा है। यह अभियान इस समय पूरे भारत में आरपीएफ विभाग चला रहा है। आरपीएफ थाना प्रभारी राजेश बनकर ने जानकारी देते हुए बताया कि वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त मनोज कुमार एवं सहा सुरक्षा आयुक्त कुमार कुरूप के मार्गदर्शन में

आरपीएफ द्वारा चलाए महिला जागरूकता अभियान में मुख्य रूप से आरपीएफ महिला प्रधान आरक्षक फरहा खान, उप निरीक्षण विद्याधर यादव एवं सहायक उप निरीक्षक राकेश मिश्रा तथा श्रवण पंवार ने बढ़ चढक़र हिस्सा लिया। अभियान के दौरान ट्रेनों में यात्रा करने वाली लड़कियों एवं महिलाओं को छेडख़ानी आदि की घटना घटित होने पर सुरक्षा हेल्प लाइन नंबर 139 का उपयोग करने की जानकारी देकर बताया कि लड़कियों एवं महिलाएं बिना किसी डर और भय के अपने गंतव्य तक सुरक्षित यात्रा कर सकती है। बताया गया कि जन जागरूकता अभियान का मुख्य उद्देश्य महिला यात्रियों की सुरक्षा को सुनिश्चित करना तथा उनकी यात्रा को सुरक्षा की दृष्टि से और भी सुरक्षित बनाना है जिससे महिलाएं मानव तस्करी, किडनैपिंग, यौन उत्पीडऩ जैसे अपराधों से बच सके और समय पर अपनी समस्या आरपीएफ विभाग को बता सके। आरपीएफ थाना प्रभारी राजेश बनकर ने बताया कि जन जागरूकता अभियान में आरपीएफ के सभी अधिकारी तथा स्टाफ अपनी ड्यूटी को बखूबी से निभा रहे है।

बाल विवाह रोकथाम के लिए जागरूकता रथ यात्रा का शुभारंभ

बैतूल। प्रदीपन संस्था बोरगांव द्वारा बाल विवाह मुक्त जिला बनाने के उद्देश्य से एक जागरूकता रथ यात्रा का शुभारंभ जिला कलेक्टर कार्यालय से किया गया। इस रथ यात्रा को अपर कलेक्टर राजीव नंदन श्रीवास्तव ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। संस्था की संचालिका श्रीमती रेखा गुजरे ने बताया कि इस रथ यात्रा का मुख्य उद्देश्य अक्षय तृतीया 30 अप्रैल के अवसर पर जिले में एक भी बाल विवाह न होने देना है तथा बैतूल को बाल विवाह मुक्त जिला बनाना है। यह रथ यात्रा बैतूल, भैंसदेही और भीमपुर ब्लॉकों के 50 गाँवों में जाकर

ग्रामीण जनसमुदाय को बाल विवाह के दुष्परिणाम और बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 की जानकारी देगी। श्रीमती गुजरे ने यह भी बताया कि इस अधिनियम के अंतर्गत बाल विवाह में शामिल होने वाले रिश्तेदार, टेंट हाउस, कैटरिंग, बैंड-बाजे और लाइटिंग सेवाओं को भी कानूनी सजा का प्रावधान है। बाल विवाह से बच्चों का शारीरिक और बौद्धिक विकास प्रभावित होता है, जिससे कुपोषण, मातृ मृत्यु दरऔर शिशु मृत्यु दर में वृद्धि होती है। रथ यात्रा कलेक्टर कार्यालय से रवाना होकर जिला पुलिस कार्यालय पहुंची, जहां अतिरिक्त जिला पुलिस अधीक्षक श्रीमती कमला जोशी ने यात्रा का स्वागत किया। उन्होंने प्रदीपन संस्था की इस पहल की सराहना करते हुए पुलिस विभाग की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।रथ यात्रा ग्राम बोड़ी, बगवाड़, कुमार टेक आदि में जाकर जनजागरूकता फैलाएगी।

विजय न्याय के प्रकल्पों से खंडेलवाल परिवार द्वारा की जा रही सेवा, सराहनीय नहीं, बल्कि अनुकरणीय: केन्द्रीय मंत्री उइके

विजय सेवा न्यास की वर्षगांठ पर 26 बेसहारा बच्चों को लिया गोद

बैतूल। पूर्व सांसद स्व. विजय कुमार खण्डेलवाल की स्मृति में बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल एवं उनके परिवार द्वारा संचालित किए जा रहे विजय सेवा न्यास की वर्षगांठ एवं बाबूजी की जन्म जयंती के अवसर पर न्यास कार्यालय मोतीवार्ड कोठीबाजार में 22 अप्रैल को आयोजित गरिमामय कार्यक्रम में विजय सेवा न्यास द्वारा 26 बेसहारा बच्चों को गोद लेकर उनकी पढ़ाई सहित समग्र विकास की जिम्मेदारी ली। कार्यक्रम में बतौर अतिथि के रूप में मौजूद केन्द्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उइके, म.प्र. जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष मोहन नागर एवं आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे नें अपने उद्बोधन में कहा कि राजनीति को सेवा का सशक्त माध्यम मानने वाले पूर्व सांसद स्व. बाबूजी के विचारों को खण्डेलवाल परिवार आगे बढ़ा रहा है। जनप्रतिनिधियों नें विजय सेवा न्यास के सेवा प्रकल्पों को सामाजिक सरोकार की सराहनीय और अनुकरणीय मिशाल बताया। कार्यक्रम में बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल नें विजय सेवा न्यास के प्रकल्पों सेवा,शिक्षा से रोजगार, चिकित्सा सहायता,महिला सशक्तीकरण, बेसहारा को सहारा की विस्तृत जानकारी दी।इस दौरान सेवा गतिविधियों पर केंद्रित डॉक्यूमेंट्री प्रदर्शित की गई। विजय सेवा न्यास द्वारा गोद लिए गए 26 बच्चों को कार्यक्रम के अतिथियों ने न्यास की ओर से शिक्षा के लिए सहायता राशि प्रदान की।

अनुकरणीय है सेवा भावना- डी.डी. उइके- केन्द्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उइके ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि पूर्व सांसद स्व.विजय कुमार खण्डेलवाल की स्मृति में संचालित विजय सेवा न्यास के प्रकल्पों से खण्डेलवाल परिवार द्वारा जरूरतमंद, पीड़ितों की सेवा की जा रही है। यह सेवा भावना

श्री तापी पुराण के पांचवें संस्करण का हेमंत खण्डेलवाल एवं अतिथियों के हस्ते विमोचन

बैतूल। पूर्व सांसद स्व. विजय कुमार खण्डेलवाल की जयंती पर विजय सेवा न्यास बैतूल में श्री तापी पुराण के पांचवे संस्करण का विमोचन केन्द्रीय मंत्री डी.डी. उईके, बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल, मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष मोहन नागर, विधायक योगेश पंडाग्रे, भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पवांर, नपाध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर सहित अन्य अतिथियों के हस्ते किया गया। श्री तापी पुराण की अनुवादक सेवानिवृत्त प्रधान अध्यापिका स्व. श्रीमति कलावती मान्धाता, संशोधन कर्ता सेवानिवृत्त प्रधान अध्यापिका स्व. श्रीमति रामकुंवर खेरे व टंकनकर्ता वर्तमान प्रधान अध्यापिका श्रीमति वर्षा खेरे है। तीन पीढ़ियों की महिलाओं के संयुक्त प्रयास से श्री तापी पुराण, जिसमें श्री तापी महात्म्य के 4466 संस्कृत श्लोको का हिन्दी रूपान्तरण हो सका।

सराहनीय ही नही बल्कि अनुकरणीय है। उन्होनें कहा कि बाबूजी की विकास के प्रति सोच और सेवा भावना नें उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया था। बाबूजी के विचारों को उनके पुत्र विधायक हेमंत खण्डेलवाल और खण्डेलवाल परिवार आगे बढ़ा रहा है।

विकास और सेवा का था विजन - मोहन नागर- मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष मोहन नागर नें कहा कि बाबूजी का विजन विकास के साथ ही सेवा का भी था। उनका फोकस हमेशा बैतूल की उन्नति पर रहा। उन्होनें राजनीति और विकास में मध्यप्रदेश में बैतूल की एक अलग पहचान बनाई । उन्होनें अपने कार्यकाल में गॉव- गॉव तक पानी, सडक़, शिक्षा सहित अन्य मुलभूत सुविधाए उपलब्ध करानें ने कोई कोर कसर नही छोड़ी। श्री नागर नें कहा कि बाबूजी के विचारों को आगे बढ़ाते हुए उनके सुपुत्र विधायक हेमंत खण्डेलवाल विकास और सेवा की नई परिभाषा लिख रहे है।

शिक्षा से समूचे समाज को मिलती है दिशा : डॉ.पंडाग्रे

आमला विधायक डॉ.योगेश पंडाग्रे नें कहा कि विजय सेवा न्यास द्वारा 26 बेसहारा बच्चों को गोद लेकर उनकी शिक्षा और समग्र विकास की जिम्मेदारी लेकर पुनीत कार्य किया है। शिक्षा से एक व्यक्ति ही नहीं बल्कि समूचे समाज को नई दिशा मिलती है। उन्होनें कहा कि पूर्व सांसद विजय कुमार खण्डेलवाल की विकास के प्रति सोच और सेवा भावना नें उन्हे बड़े राजनेता के रूप में स्थापित किया। बाबूजी के व्यक्तित्व से राजनीति के क्षेत्र में बैतूल की पहचान प्रदेश और देश में बनी है। बाबूजी के आदर्श पर चलते हुए खण्डेलवाल परिवार द्वारा विजय सेवा न्यास के माध्यम से सेवा कार्य किए जाना सराहनीय है।

सेवा सहयोग के लिए परिवार हमेशा तत्पर: हेमंत

बैतूल विधायक हेमंत खण्डेवलवाल ने कहा कि चहुंमुखी विकास, जन-जन की तरक्की,जरूरतमंदो की सेवा और सहयोग के लिए उनका परिवार हमेशा तत्पर रहा है। बाबूजी राजनेता होने के साथ ही सामाजिक सरोकार से जुडें रहे। वे राजनीति को सेवा का सशक्त माध्यम मानते थे। बाबूजी की स्मृति में विजय सेवा न्यास की स्थापना कर न्यास के माध्यम से सेवा,शिक्षा से रोजगार,नारी सशक्तीकरण, बेसहारा को सहारा पॉच प्रकल्पों को संचालन किया जा रहा है। उन्होनें बाताया कि सेवा प्रकल्प के तहत निःशुल्क शांति वाहन एवं स्वर्ग रथ का संचालन किया जा रहा है। शांति वाहन से लगभग साढे चार हजार और स्वर्ग रथ से 1200 पार्थिक देह गंतव्य तक पहुचाई जा चुकी है। ग्रामीण इलाकों में बच्चों को क्वालिटी एजुकेशन एवं स्किल ट्रेनिंग देने के लिए 15 हाईटेक कोचिंग सेंटर संचालित किए जा रहे है। वाईफाइ कनेक्टिविटी के साथ प्रोजेक्टर- कम्प्यूटर से लैस कोचिंग सेंटरों में विषय विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा बच्चों को मार्गदर्शन दिया जा रहा है। कोचिंग सेंटरों से लगभग दो हजार विघार्थी लाभन्वित हो चुके है। श्री खण्डेलवाल नें बताया कि जरूरतमंद कामकाजी महिलाओं को आत्मनिर्भर बनानें के लिए पंख एक पहल के तहत ब्यूटी पार्लर, कम्प्यूटर,सिलाई- कढाई,स्पोकन इंग्लिश का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अभी तक लगभग 350 महिलाएं लाभान्वित हो चुकी है।

कार्यक्रम में पूर्व सांसद सुभाष आहूजा, पूर्व सांसद श्रीमति ज्योति धुर्वे, पूर्व विधायक शिवप्रसाद राठौर,नपा.अध्यक्ष श्रीमति पार्वती बारस्कर, भाजपा जिला अध्यक्ष सुधाकर पवांर, भाजपा जिला अध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला, ज्योतिषाचार्य डॉ.पंडित कांत दीक्षित, डॉ.सतीश खण्डेलवाल, सीए प्रदीप खण्डेलवाल, मुकेश खण्डेलवाल, निजी स्कूलों के संचालक, पत्रकार गणमान्य नागरिक, पार्टी पदाधिकारी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

जनसुनवाई में सामने आई ग्रामीणों की जमीनी समस्याएं, कलेक्टर ने दिखाया संवेदनशील रुख

कलेक्टर ने कृषि भूमि पर हुए अतिक्रमण को हटाने के दिए निर्देश

बैतूल। मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित जनसुनवाई के दौरान कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने नागरिकों की समस्याएं सुनीं। इस दौरान आवेदकों ने अतिक्रमण हटाए जाने समेत विभिन्न समस्याओं के निराकरण के लिए आवेदन प्रस्तुत किए। जनसुनवाई में मुलताई तहसील के ग्राम मोही निवासी बुजुर्ग करण सिंह राजपूत एवं चिचोली तहसील के ग्राम बोरी निवासी बुजुर्ग बालाराम यादव ने कृषि भूमि पर हुए अवैध कब्जे की शिकायत की। प्राप्त आवेदनों पर संज्ञान लेते हुए कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने संबंधित तहसीलदारों को तत्काल अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए। जनसुनवाई में कुल 117 आवेदन प्राप्त हुए। जिस पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने संबंधित अधिकारियों को प्राप्त आवेदनों का गंभीरतापूर्वक निराकरण किए जाने के निर्देश दिए। इस अवसर पर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अक्षत जैन ने भी नागरिकों की समस्याएं सुनीं। मुलताई तहसील के ग्राम चंदोराकला निवासी रामनाथ और वीरचंद ने जनसुनवाई में आवेदन देकर मक्के की फसल की मुआवजा राशि दिलवाई जाने की मांग की। जिस पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने संबंधित अधिकारी को शिकायत का नियम अनुसार निराकरण किए जाने के निर्देश दिए। बैतूल तहसील के ग्राम खेड़ी सावलीगढ़ निवासी नीलम धोटे ने आवेदन के माध्यम से ग्राम के बाजार में दुकान लगाने के लिए जगह दिलाए जाने की मांग की। प्राप्त आवेदन पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने जनपद पंचायत सीईओ को आवेदक महिला की सहायता किए जाने के उद्देश्य से आवेदन का निराकरण करने के निर्देश दिए। बैतूल तहसील के ग्राम खड़ला निवासी काशी बाई बारमसे ने वृद्धावस्था पेंशन स्वीकृत करवाने के लिए आवेदन दिया। जिस पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने पंचायत, सामाजिक न्याय विभाग के संबंधित अधिकारी को पात्रता का परीक्षण कर प्रकरण के निराकरण के निर्देश दिए।

मजदूरी दिलाए जाने की लगाई गुहार- जनसुनवाई में घोड़ाडोंगरी तहसील के ग्राम बाटकी डोह निवासी लक्ष्मण सरदार ने आवेदन के माध्यम से बताया कि भीमपुर में सीएम राइस भवन के निर्माण में 10 मजदूरों को मजदूरी का भुगतान कंपनी द्वारा नहीं किया गया है। जिस पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने श्रम विभाग के अधिकारी को प्रकरण की जांच कर आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए। घोड़ाडोंगरी तहसील के ग्राम कैली निवासी बतेसिया काकोडिया ने मृत्यु उपरांत मिलने वाली संबल योजना की सहायता राशि दिलवाई जाने के लिए आवेदन दिया। जिस पर कलेक्टर से सूर्यवंशी ने श्रम विभाग के अधिकारी को प्रकरण के निराकरण के निर्देश दिए। इसी प्रकार संबल कार्ड के पैसे नहीं मिलने की शिकायत बिरुल बाजार निवासी ज्योति गिरी ने की। जिस पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने श्रम विभाग के अधिकारी को प्रकरण के जांच के निर्देश दिए।

चित्रकला प्रतियोगिता में बच्चों ने दिखाई कल्पनाशक्ति

प्रतियोगिता में 450 से अधिक छात्र-छात्राओं ने लिया हिस्सा

बैतूल। मध्यप्रदेश राज्य आनंद संस्थान के आनंद विभाग द्वारा 22 अप्रैल 2025 को अंतर्राष्ट्रीय मातृ भूमि दिवस के अवसर पर हमारी शक्ति हमारा ग्रह थीम पर चित्रकला, पोस्टर और स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी और जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अक्षत जैन के मार्गदर्शन में नेहरू पार्क, पुलिस लाइन, बैतूल में सुबह 9 बजे से प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए आनंद विभाग के जिला संपर्क व्यक्ति महेश गुंजेले ने बताया कि प्रतियोगिता का विषय था धरती हमारी मां, जिस पर जिले के शासकीय और अशासकीय स्कूलों के 450 से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। भाग लेने वाले प्रमुख विद्यालयों में शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूलगंज, आरडीपीएस बैतूल, मानसरोवर स्कूल बड़ोरा, सतपुड़ा पब्लिक स्कूल सोनाघाटी, पीएमश्री एमएलबी स्कूल बैतूल, लिटिल फ्लावर स्कूल बैतूल, शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय बैतूल, कन्या शिक्षा परिसर सदर बैतूल, दिव्यांग विद्यालय बैतूल, सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा आदि शामिल रहे। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। उन्होंने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि हमें अपनी पृथ्वी के प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए, जो हमें जीवन के सभी आवश्यक तत्व देती है और बदले में कुछ नहीं मांगती। यह दिन पृथ्वी के प्रति आभार प्रकट करने और उसे याद करने का दिन है। मुख्य नगर पालिका अधिकारी सतीष मटसेनिया ने

पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि प्रदेश में चल रहे गंगाजल संवर्धन कार्यक्रम में जनभागीदारी आवश्यक है, ताकि जल संरक्षण और संवर्धन को बल मिले।

जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. अनिल कुमार कुशवाह ने कहा कि इस आयोजन से विद्यार्थियों में मातृ भूमि के प्रति जागरूकता बढ़ेगी और वे धरती मां को अधिक गहराई से समझ सकेंगे। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत चित्रों, स्लोगनों और पोस्टरों को सभी ने सराहा। सभी प्रतिभागी छात्रों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

कार्यक्रम के निर्णायक मंडल में चित्रकला विशेषज्ञ संजीव डफरे, निमिषा शुक्ला, श्रणिक जैन, मैथूस पॉल शामिल रहे। पुणे से पधारे वरिष्ठ रंगकर्मी एवं साहित्यकार दिनेश दीक्षित विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर समाजसेवी संजय शुक्ला, जिला आनंद विभाग के नोडल अधिकारी सतीष पंवार, तथा नगर के अनेक शिक्षकों, संस्थाओं एवं गणमान्य नागरिकों ने अपनी उपस्थिति से आयोजन की गरिमा बढ़ाई। छात्रों के उत्साहवर्धन और सहयोग के लिए प्रतिला धोत्रे, आनंद सहयोगी आशीष पचौरी सहित आनंदम टीम के सदस्य और अनेक स्वयंसेवी भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में सभी ने मिलकर पृथ्वी मां को बचाने का संकल्प लिया और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया।

भारत रत्न डॉ. अंबेडकर जी के व्यक्तित्व पर संगोष्ठी

बाबा साहब ने दलितों और वंचितों के सम्मान के लिए हमेशा काम किया : सांसद महेन्द्र सिंह सोलंकी

धार (नप्र)। भारतीय जनता पार्टी जिला संगठन द्वारा बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की 135वीं जयंती के उपलक्ष्य में अंबेडकर जी के व्यक्तित्व, कृतित्व और राष्ट्रनिर्माण में उनके अमूल्य योगदान को लेकर जिला स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन मंगलवार को धार में संपन्न हुआ। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता देवास - शाजापुर लोकसभा सांसद महेंद्र सिंह सोलंकी एवं पूर्व युवा आयोग अध्यक्ष डॉ निशांत खरे ने संबोधित किया। इस दौरान भाजपा संगठन संभाग प्रभारी राघवेंद्र गौतम, भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती, विधायक नीना वर्मा संगोष्ठी टोली सदस्य महेंद्र सिंह चाचू बना अनुसूचित जाति मोर्चा जिला अध्यक्ष पूनमचंद फकीरा मंचासीन रहे। अतिथियों ने सर्व प्रथम भारतमाता संविधान निर्माता डॉ अंबेडकर जी,पितृ पुरुष पंडित दीनदयाल उपाध्याय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्रों पर पुष्पांजलि व दीप प्रज्जवलित कर संगोष्ठी का आरंभ किया।

स्वागत उद्बोधन में निलेश भारती ने कहा कि भाजपा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में संविधान निर्माता भारत रत्न बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी के सपने को साकार करने का काम कर रहे है ।

मुख्य वक्ता सांसद महेन्द्र सिंह सोलंकी ने कहा कि आज संविधान निर्माता भारत रत्न बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर सम्मान अभियान संगोष्ठी में पधारे वरिष्ठ

जन और मातृशक्ति का में अभिनंदन करता हुं । धार महू लोकसभा के लोगो के लिए बड़े गर्व की बात है की डॉ अंबेडकर जी का जन्म आपके संसदीय क्षेत्र अंबेडकर नगर महू में हुआ। बाबा साहब ने दलितों और वंचितों के सम्मान के लिए हमेशा काम किया है। कांग्रेस बाबा साहब के नाम पर घड़ियाली आसू बहाने का काम किया । कांग्रेस ने हमेशा ही बाबा साहब का अपमान किया है। संसद में भी बाबा साहब के नाम पर कांग्रेस घड़ियाली आंसू बहाती हैं। बाबा साहब ने भारत में रहने वाले हर वर्ग के लिए काम किया है। बाबा साहब समान नागरिक संहिता के पक्ष में थे परंतु देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के कारण हिंदू कोड बिल लागू नहीं होने दिया । नेहरू के कारण बाबा साहब ने मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। कांग्रेस ने बाबा साहब को अपमानित करने का कोई अवसर नहीं छोड़ा। बाबा साहब को भारत रत्न देने का काम भाजपा की सरकार ने किया है। बाबा साहब के नाम से पंच तीर्थों के निर्माण का काम भाजपा की सरकार ने मोदी के नेतृत्व में किया है। आज महू नागपुर लंदन दिल्ली और मुंबई को पंच तीर्थ से पहचान मिली है। कांग्रेस ने दिल्ली में बाबा साहब की अंत्येष्टि के लिए स्थान तक नहीं दिया ।

मुख्य वक्ता डॉ निशांत खरे बाबा साहब की प्रतिभा को देखते हुए बड़ौदा गायकवाड़ ने आगे की पढ़ाई के लिए लंदन भेजा। उस यूनिवर्सिटी के 100 वर्ष पूरे होने पर 100 प्रतिभावान विद्यार्थियों की सूची बनी जिसमें बाबा साहब का नाम सबसे ऊपर रखा गया। कांग्रेस ने बाबा साहब आंबेडकर को संविधान सभा का प्रमुख नहीं बनने दिया। बाबा साहब का दिया संविधान कांग्रेस ने 90 से अधिक बार बदला है ।

राघवेंद्र गौतम ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी बाबा साहब का हमेशा से सम्मान करती रही हैं। कांग्रेस ने बाबा साहब के नाम का उपयोग किया कांग्रेस ने बाबा साहब का सम्मान कभी नहीं किया । देश और दुनिया में सम्मान बढ़ाने का काम संघ और भाजपा ने किया है।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि संगोष्ठी के दौरान अनुसुचित जाति वर्ग के विशिष्ट जनों का शाल श्रीफल और डॉ अंबेडकर के प्रतीक चिंह भेट कर सम्मान किया गया जिसमें किशोर नाथ जी महाराज गेंदालाल फकीरा रामसिंह वर्मा रमेश मेवाड़ श्याम खोड़े मुरलीधास कैलाश पंसोरिया जमुना बाई राजाराम चौहान सीताराम सोनार्थी डॉक्टर सौरभ बौरासी बीएल चौहान भारत सोलंकी शंकर लाल डामेचा जमनालाल सोलंकी समेत अनेक समाजजन शामिल थे।

इस अवसर पर डॉक्टर, वकील, व्यापारी, भूतपूर्व सैनिक, सामजिक संगठन का प्रतिनिधित्व करने वाले, सेवानिवृत्त शासकीय कर्मचारी उपस्थित थे। संगोष्ठी का संचालन अनुसूचित जाति मोर्चा जिला महामंत्री ज्वाला सौलंकी व आभार रतन पंवार ने माना।

महिला एवं बाल विकास परियोजना भीमपुर ने मनाया पोषण पखवाड़ा

ग्राम चिखली में परियोजना स्तरीय कार्यक्रम आयोजित

बैतूल। पोषण अभियान अंतर्गत महिला एवं बाल विकास परियोजना भीमपुर में सातवां पोषण पखवाड़ा मंगलवार को सभी पर्यवेक्षकों द्वारा उत्साह के साथ मनाया गया। ग्राम पंचायत चिखली में आयोजित परियोजना स्तरीय पोषण पखवाड़ा के समापन कार्यक्रम में ग्रामीण महिला आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सहायिका एवं परियोजना अधिकारी श्रीमती रामबाई बामने, जनपद उपाध्यक्ष श्रीमती प्रेमलता कासदे, पर्यवेक्षक इंदु पंडोल उपस्थिति रही। उल्लेखनीय है कि

पोषण अभियान के तहत 8 अप्रैल से 22 अप्रैल 2025 तक सातवां पोषण पखवाड़े का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान जीवन के प्रथम 1000 दिवस, पोषण स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखने की समझाइश दी गई। इसके साथ ही पोषण ट्रैकर में लाभार्थी मॉड्यूल को लोकप्रिय बनाने के लिए आंगनबाड़ी स्तर का प्रचार-प्रसार रैली के माध्यम से किया गया। परियोजना अधिकारी श्रीमती रामबाई बामने, पर्यवेक्षक इंदु पंडोल, रोल धुर्वे, गीता धुर्वे, रूपा बोबडे, नेहा सावनेर व सभी पर्यवेक्षकों द्वारा अपने-अपने क्षेत्र में पोषण पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन परियोजना अधिकारी भीमपुर के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम में कुपोषण को प्रबंध मॉड्यूल के माध्यम से समझाया गया। थीम के अतिरिक्त विभिन्न अभिकरण विभागों के समन्वय से पोषण पखाड़ा के दौरान आंगनबाड़ी केंद्र सेक्टर एवं परियोजना स्तर की गतिविधियां की गई। इसके अलावा स्थानीय पोषण संसाधनों को बढ़ावा देना, सामुदायिक जागरूकता और पोषण संवेदनशील कार्यक्रम, आंगनबाड़ी केंद्रों में वर्षा जल संरक्षण गतिविधियां भी की गई। वहीं किशोरियों और गर्भवती महिलाओं के लिए पोषण सत्र का आयोजन की गतिविधियों को भी पोषण पखवाड़ा 2025 के आयोजन में सम्मिलित किया गया।

सहकारिता में नवाचार से नित नए आयाम गढ़ता मध्यप्रदेश

दुर्गेश रायकवार

उप संचालक, जनसंपर्क

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 2025 को अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस वर्ष की थीम है 'सहकारिता एक बेहतर दुनिया का निर्माण करती है'। स्व से सब का भाव हो जाना ही सहकार है। भारतीय संस्कृति स्वयं से ऊपर उठकर हम की भावना रखना सिखाती है और इसी भावना से जन्म हुआ है सहकार का। सनातन संस्कृति में जब हम प्रार्थना करते हैं तो सर्वे भवन्तु सुखिनः की कामना करते हैं। सबके सुख और मंगल की यही कामना सहकारिता का मूल भाव है। हम लाभ से ज्यादा सेवा को महत्व देते हैं। एक से ज्यादा समूह को महत्व देते हैं। प्रतिस्पर्धा से ज्यादा परस्पर सहयोग को महत्व देते हैं और यही सहकारिता है।

भारत का सहकारिता आंदोलन सांस्कृतिक और सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में गहराई से निहित है। यह आंदोलन समावेशी विकास, सामुदायिक सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में विकसित हुआ है। सहकारिता मंत्रालय की स्थापना और इसकी नवीनतम पहलों के माध्यम से सरकार ने एक सहकारिता-संचालित मॉडल को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की है, जो देश के हर कोने तक पहुंचेगा और समाज की मुख्य धारा से अलग पड़े समुदायों के लिए स्थायी आजीविका और वित्तीय समावेशन की सुविधा प्रदान करेगा।

सहकारी समितियों को पुनर्जीवित करने की दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ केन्द्रीय सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने इस क्षेत्र को मजबूत और आधुनिक बनाने के उद्देश्य से एक व्यापक नीतिगत ढांचा, कानूनी सुधार और रणनीतिक पहल शुरू की। सरकार ने सहकारी समितियों के लिए 'व्यापार करने में आसानी', डिजिटलीकरण के माध्यम से पारदर्शिता सुनिश्चित करने और वंचित ग्रामीण समुदायों के लिए समावेशिता को बढ़ावा देने की अपनी पहल पर काफी जोर दिया है। केन्द्रीय मंत्री श्री अमित शाह के नेतृत्व में भारत का सहकारिता आंदोलन एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। अपनी दूरदर्शी सोच को आधार बनाकर उन्होंने सहकारिता के लिए नई विचारधारा को जन्म दिया है। उनके नेतृत्व में सहकारिता मंत्रालय ने भारतीय सहकारी आंदोलन में उल्लेखनीय परिवर्तन किए हैं। प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पैक्स) का विस्तार, पैक्स के लिए बेहतर प्रशासन और व्यापक समावेशिता, पैक्स को कम्प्यूटरीकृत करने एवं पैक्स को नाबार्ड से जोड़ने का काम किया है।

नई श्वेत क्रांति की ओर अग्रसर मध्यप्रदेश

प्रदेश में सहकार से समृद्धि की पहल के तहत केन्द्रीय मंत्री श्री अमित शाह की उपस्थिति में राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड और स्टेट डेयरी को-ऑपरेटिव फेडरेशन तथा फेडरेशन से संबद्ध दुग्ध संघों के बीच कोलेबोरेशन एग्रीमेंट हुआ। इस कोलेबोरेशन एग्रीमेंट के माध्यम से सहकारी डेयरी नेटवर्क को सशक्त बनाने का लक्ष्य है, जिससे दुग्ध उत्पादकों की आय में वृद्धि हो सके और सांची ब्रांड का उत्थान और विस्तार किया जा सके। यह नई श्वेत क्रांति की ओर प्रदेश का महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। इसका लाभ दुग्ध उत्पादकों और दुग्ध उपभोक्ताओं दोनों को मिलेगा। दुग्ध उत्पादक राज्यों में मध्यप्रदेश टॉप-थ्री में है, हमारे यहां देश का करीब 9 प्रतिशत दुग्ध-उत्पादन होता है। प्रदेश में रोजाना करीब 551 लाख किलोग्राम दूध का उत्पादन होता है, जिसमें से मध्यप्रदेश स्टेट को-आपरेटिव डेयरी फेडरेशन और इससे जुड़े संघ करीब 10 लाख किलोग्राम दूध जमा करते हैं।

डेयरी क्षेत्र में अपार संभावनाओं वाला प्रदेश है मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश देश का फूड बास्केट तो है ही, हममें डेयरी कैपिटल बनने की क्षमता भी है। देश का डेयरी कैपिटल बनने के लिए हमारे पास पर्याप्त संसाधन हैं। प्रदेश में सहकारी डेयरी नेटवर्क को हाइटेक बनाने के लिए एक डेयरी डेवलपमेंट प्लान तैयार करने की योजना है, जिसमें लगभग 1450 करोड़ रुपए का निवेश होगा। प्रदेश में औसत दुग्ध संकलन को दोगुना किया जाएगा, दुग्ध संकलन को 10 लाख किलो से बढ़ाकर 20 लाख किलो प्रतिदिन करने का प्रयास शुरू कर दिया गया है। प्रदेश में दुग्ध सहकारी समितियों की संख्या 6 हजार से बढ़ाकर 9 हजार की जाएगी। प्रदेश भर के 18 हजार गांवों के दुग्ध-उत्पादन से जुड़े किसान भाइयों को सहकारी डेयरी नेटवर्क से जोड़ेंगे। ग्राम स्तर पर दुग्ध शीतलीकरण की क्षमता विकसित करेंगे, औसत पैकेट दुग्ध विक्रय 7 लाख लीटर प्रतिदिन से बढ़ाकर 15 लाख लीटर प्रतिदिन करेंगे।

मिल्क प्रोसेसिंग क्षमता बढ़ाने के लिए नए हाइटेक संयंत्र स्थापित किए जाएंगे, जिससे दुग्ध संकलन और दुग्ध विक्रय में वृद्धि हो सके। सभी दुग्ध संघों का व्यवसाय 1944 करोड़ से बढ़ाकर 3500 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष किया जाएगा। एनडीडीबी द्वारा एमपीसीडीएफ एवं दुग्ध संघों के प्रबंधन, संचालन, तकनीकी सहयोग, नवीन प्रसंस्करण एवं अन्य अधोसंरचनाएं विकसित करेंगे। एनडीडीबी द्वारा दुग्ध सहकारी समितियों के सभी सदस्यों, सचिवों, प्रबंधन समिति के सदस्यों और दुग्ध संघों के कर्मचारियों को स्वच्छ और गुणवत्तायुक्त दुग्ध उत्पादन के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा।

सहकारिता से सरल हुई सशक्तिकरण की राह

प्रदेश में डेयरी गतिविधियों के लिए त्रि-स्तरीय सहकारी संस्थाओं का गठन कर, ग्रामीण दुग्ध सहकारी समितियां, सहकारी दुग्ध संघ और राज्य स्तर पर एमपीसीडीएफ (मध्यप्रदेश स्टेट को-ऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड) की स्थापना की गई। ये दुग्ध सहकारी समितियां किसानों से दूध संग्रह, गोवंश के कृत्रिम गर्भाधान, संतुलित पशु आहार, तकनीकी पशु प्रबंधन, उन्नत चारा बीज, पशु उपचार और टीकाकरण जैसी सुविधाएं देने की जिम्मेदारी निभा रही हैं।

दुग्ध उत्पादक किसानों के साथ मध्यप्रदेश सरकार

डेयरी क्षेत्र विकसित करने के संकल्पों की सिद्धि के लिए प्रदेश में श्वेतक्रांति मिशन के अंतर्गत 2500 करोड़ रुपए के निवेश का लक्ष्य है। प्रदेश में निराश्रित गौवंश की समस्या के निराकरण के लिए स्वावलंबी गौशालाओं की स्थापना की नीति : 2025 की स्वीकृति दी है। गौ-शालाओं को पशु चारे और आहार के लिए दी जाने वाली अनुदान राशि को भी 20 रुपये प्रति गौवंश प्रति दिवस से बढ़ाकर 40 रूपये प्रति गौवंश प्रति दिवस करने का निर्णय लिया गया है।

मुख्यमंत्री पशुपालन विकास योजना अब डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना के नाम से जानी जाएगी। डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना अंतर्गत 25 दुधारू गाय अथवा भैंस की इकाई स्थापित करने का प्रावधान किया गया। प्रदेश की गौ शालाओं को हाइटेक बनाया जा रहा है। ग्वालियर स्थित आदर्श गौ-शाला में देश के पहले 100 टन क्षमता वाले सीएनजी प्लांट की स्थापना की गई है। भोपाल के बरखेड़ी-डोब में 10 हजार गौ-वंश क्षमता वाली हाइटेक गौ-शाला बनाई जा रही है। प्रदेश के सवा 2 लाख किसानों एवं दुग्ध उत्पादकों को सहकारिता के माध्यम से जोड़ा गया है।

सरकार द्वारा दुग्ध सहकारी संघों के डेयरी प्रोडक्ट्स को मार्केट लिंकेज दिलाकर वैश्विक सप्लाई चेन से कनेक्ट करने की योजना पर कार्य किया जा रहा है। पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए नई योजना के तहत 25 या 25 से ज्यादा गायों का पालन करने वाले पशुपालकों को पशुपालन पर अनुदान दिया जाएगा।

जीआईएस से शुरू हुआ मध्यप्रदेश में सहकारिता का नया अध्याय

सहकार को बढ़ावा देने के लिए इस वर्ष हुई ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में पहली बार सहकारिता क्षेत्र को जोड़ा गया है। समिट में सहकारिता क्षेत्र में 2305 करोड़ से अधिक के 19 एमओयू साइन हुए हैं। को-ऑपरेटिव पब्लिक प्राइवेट-पार्टनरशिप (सीपीपीपी) मॉडल पर भी काम किया गया। सीपीपीपी मॉडल देश की सहकारिता को बदलने का काम करेगा। सहकारिता विभाग में निवेश विंग की स्थापना करने का निर्णय लिया है। निवेश विंग डे-टू-डे काम करेगी।

सहकार से मिल रही विकास को रफ़्तार

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और केन्द्रीय सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के मार्गदर्शन में देश की सभी सहकारी समितियों के सुदृढ़ीकरण के लिए अनेक कदम उठाए हैं। सरकार द्वारा प्राथमिक कृषि साख समितियों (पैक्स) के कंप्यूटरीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, जिससे पारदर्शिता और दक्षता में वृद्धि हो रही है। पैक्स के डिजिटलीकरण से किसानों को त्वरित ऋण सुविधा, ऑनलाइन लेन-देन और रिकॉर्ड प्रबंधन में मदद मिल रही है। 'सहकारिता में सहयोग' यानी 'को-ऑपरेशन एमॉन्ग को-ऑपरेटिवस्' को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे छोटे और बड़े सहकारी संस्थान एक-दूसरे की मदद कर सकें। सहकारी समितियाँ अब केवल कृषि तक सीमित नहीं हैं, बल्कि डेयरी, क्रेडिट, विपणन, बीज वितरण, जैविक खेती को बढ़ावा देना, महिला स्व-सहायता समूहों को समर्थन और उपभोक्ता सेवाओं तक अपना दायरा बढ़ा रही हैं।

डिजिटलीकरण के साथ-साथ सहकारिता के क्षेत्र में नवाचार और प्रशिक्षण पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इन प्रयासों से मध्यप्रदेश की सहकारी समितियाँ किसानों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ बन चुकी हैं। ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाकर, डिजिटल एकीकरण और सहकारी उद्यमिता को बढ़ावा देकर सरकार सहकारी नेतृत्व पर आधारित आर्थिक विकास के लिए एक मजबूत और टिकाऊ मॉडल तैयार कर रही है।

उम्मीद है कि राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड और स्टेट डेयरी को-ऑपरेटिव फेडरेशन तथा फेडरेशन से संबद्ध दुग्ध संघों के बीच कोलैबोरेशन एग्रीमेंट डेयरी व्यवसाय के क्षेत्र में मिसाल कायम करेगा।

पुलिस ने नहीं की सुनवाई तो चड्डी बनियान में कलेक्ट्रेट पहुंचा पीड़ित पति

कलेक्टर को लापता पत्नि और बेटे का फोटो दिखाकर लगाई मदद की गुहार

सीहोर (नप्र)। पुलिस ने सुनवाई नहीं की तो एक शख्स ने अपने बच्चे के साथ कलेक्ट्रेट में चडड़ी बनियान पहनकर अनौखा प्रदर्शन किया। कलेक्ट्रेट में तैनात सुरक्षाकर्मियों ने चडड़ी बनियन पहनकर आने पर इस पीड़ित ग्रामीण को जनसुनवाई से बाहर निकाल दिया। सुरक्षाकर्मियों ने पीड़ित शख्स से कपड़े पहनकर आने को कहा जिस के बाद पत्नि वियोग में पीड़ित पति ने कलेक्टर को लापता पत्नि और बेटे का फोटो दिखाकर मदद की गुहार लगाई।

पीड़ित पति ने कहा की इछावर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है, लेकिन छोटे बेटे को लेकर गई पत्नि की खोज पुलिस दो साल में भी नही कर पाई है। कलेक्टर बालागुरू के, ने पत्नि को तलाश कर देने का आश्वासन देकर पति को रवाना किया और आगामी कार्रवाही के लिए आवेदन को पुलिस अधीक्षक कार्यालय भेजने के निर्देश दिए।

दरअसल मामला यह है कि अर्जुन मालवीय आत्मज स्व अमरसिंह मालवीय निवासी ग्राम मोलगा तहसील इछावर का विवाह 15 वर्ष पहले ग्राम बिचुली की बबीता पिता चंदर सिंह से हुआ था। अर्जुन मजदूरी कर अपने परिवार का पालन पोषण कर रहा था इस बीच दो पुत्र हुए। बबीता बड़े बेटे को अर्जुन के पास छोड़कर मायके गई और वहीं से छोटे बेटे को लेकर अचानक लापता हो गई। अर्जुन ने अनेक स्थानों पर बबीता की तलाश की लेकिन वह नहीं मिली। जिस के बाद इछावर थाने में पत्नि के लापता होने की रिपोर्ट दर्ज कराई।

बबीता को दिनांक 12/10/2023 को ग्राम मोलगा के हीं राजेश आ. अमरसिंह के साथ सीहोर में देखा गया। पुलिस को भी सूचना दी लेकिन पुलिस ने राजेश को नहीं पकड़ा।

एम्स भोपाल में आयोजित हो रहा पांच दिवसीय राष्ट्रीय आपातकालीन जीवन रक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में संस्थान 21 अप्रैल से 25 अप्रैल 2025 तक नेशनल इमरजेंसी लाइफ सपोर्ट (नेल्स) कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है, जिसका उद्देश्य मध्यप्रदेश में आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं को सुदृढ़ बनाना है। यह पाँच दिवसीय भारत में विकसित 'ट्रेनिंग ऑफ ट्रेनर्स फॉर डॉक्टर्स' कार्यक्रम, ट्रॉमा एवं इमरजेंसी मेडिसिन विभाग, एम्स भोपाल द्वारा भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ) के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम चिकित्सा विशेषज्ञों की आपातकालीन देखभाल संबंधी क्षमताओं को बढ़ाने पर केंद्रित है और प्रशिक्षकों की एक ऐसी टीम तैयार कर रहा है जो आपातकालीन परिस्थितियों में जीवनरक्षक उपायों को और अधिक प्रभावी रूप से प्रसारित कर सके। मध्यप्रदेश के विभिन्न मेडिकल कॉलेजों से 24 डॉक्टर इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं। इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. मोहम्मद यूनुस, ट्रॉमा एवं इमरजेंसी मेडिसिन विभागाध्यक्ष एवं नोडल अधिकारी द्वारा किया जा रहा है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने डॉ. पारुल मुलिक को कार्यक्रम के लिए प्रेक्षक के रूप में नामित किया है, वहीं डॉ. अजय कुमार एक बाह्य प्रशिक्षक के रूप में प्रतिभागियों के कौशल विकास में अपना योगदान दे रहे हैं।

इस अवसर पर अपने विचार साझा करते हुए प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, 'एम्स भोपाल हमेशा स्वास्थ्य सेवाओं में नए मानदंड स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध रहा है और यह कार्यक्रम हमारी आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं को और अधिक सुदृढ़ कर रहा है। एनईएलएस पहल चिकित्सा विशेषज्ञों को आवश्यक कौशल से सुसज्जित कर रही है ताकि वे आपातकालीन स्थितियों में प्रभावी ढंग से निपट सकें।

रघुवंशी विकास मंच की नवीन समिति का गठन

सोहागपुर। रघुवंशी विकास मंच की नवीन समिति का गठन शिवानी गार्डन परिसर में गजेंद्र सिंह चौधरी की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर रघुवंशी समाज सोहागपुर, पिपरिया, बनखेड़ी के सजातीय बन्धुओं ने अपनी सहभागिता निभाई। गहन विचार-विमर्श के उपरांत सर्व सम्मति से नवीन कार्यकारिणी गठित की

गई। जिसमें अध्यक्ष एस. एल. रघुवंशी पिपरिया,उपाध्यक्ष संतोष रघुवंशी बनखेड़ी, उपाध्यक्ष दिलीप रघुवंशी पिपरिया, सचिब धर्मेन्द्र रघुवंशी बनखेड़ी, कोषाध्यक्ष मुकेश रघुवंशी सहसचिव राजन रघुवंशी सोहागपुर,एवं सुमेर सिंह रघुवंशी बनखेड़ी को बनाया गया। इसी बैठक में मई महीने में 10वीं एवं 12वीं का रिजल्ट घोषित होने के बाद समाज के प्रतिभामान छात्र छात्राओं के सम्मान का आयोजित करने की सहमति बनी। उल्लेखनीय है कि रघुवंशी विकास मंच तीनों विकास खंडो के अधिकारी कर्मचारी एवं व्यापारी वर्ग का संगठन है।

क्षेत्रवासियों को 31 लाख की सौगात, नालियों के निर्माण से मिलेगी जल भराव से मुक्ति

सीहोर। नगर में लम्बे समय से जलभराव की समस्या के अब खत्म होने के दिन आ गए हैं। नगर पालिका परिषद ने इस समस्या पर योजना पर तेजी से काम चल रहा है। बारिश से पहले नगर की जल निकासी व्यवस्था को दुरुस्त करने का निर्देश भी जारी किए जा चुके हैं। इसको लेकर बीते दिन करीब एक करोड़ से अधिक की लागत से नालियों के निर्माण कराए गए है। इस क्रम में सोमवार को शहर के वार्ड क्रमांक 18 में दो नालियों का निर्माण कार्य नगर पालिका अध्यक्ष प्रिंस राठौर ने क्षेत्रवासियों से कराते हुए कहा कि बारिश के पहले सभी वार्ड की नालियों का निर्माण पक्का हो जाएगा। इससे जल भराव से मुक्ति मिलेगी। भूमि पूजन के दौरान नगर पालिका उपाध्यक्ष विपिन सास्ता, कमलेश राठौर, अर्जुन राठौर,

प्रदीप गौतम, राजेश मांझी, नरेन्द्र राजपूत, लोकेन्द्र वर्मा, संतोष शाक्य, मुकेश मेवाड़ा सहित अन्य बड़ी संख्या में पार्षद और क्षेत्रवासी शामिल थे।

क्षेत्रवासियों का कहना है कि वार्ड में अनेक नालियों का निर्माण बहुत जरूरी है। इसके बनने से लोगों के घरों और दुकानों से निकलने वाले पानी के कारण रोड पर जलभराव की समस्या अब नहीं होगी। उनकी भावनाओं को देखते हुए दो नालियों के निर्माण कार्य करीब 31 लाख से किया जाएगा। वार्ड के पार्षद प्रदीप गौतम ने बताया कि वार्ड के अंतर्गत मनोहर कुशवाहा के घर से लेकर मंशा देवी मंदिर तक करीब 14 लाख और यश कम्प्यूटर से लेकर मछलीपुल चौराहे तक करीब 17 लाख के नालियों के निर्माण कार्य का भूमि पूजन किया गया। लोगों की समस्या को देखते हुए उन्होंने नाली निर्माण काम शुरू कराया है। जल्द ही इस नाली का निर्माण पूरा हो जाएगा। उसके बाद वार्ड के अति आवश्यक कार्य को प्राथमिकता से कराए जाएंगे।

रेपो रेट की राहत

मुनीष भाटिया

संजीवनी या एक चक्रव्यूह का आमंत्रण?

हर बार जब भारतीय रिज़र्व बैंक रेपो रेट में कटौती करता है, तो वित्तीय गलियारों में जैसे एक हलचल सी मच जाती है। अखबारों की सुर्खियां इसे राहत की बारिश बताती हैं, और अर्थशास्त्री इसके संभावित प्रभावों पर बहस में जुट जाते हैं। लेकिन आम आदमी के मन में उठने वाला सवाल बहुत सीधा होता है – क्या अब जिंदगी थोड़ी आसान होगी?

रेपो रेट में कटौती का सीधा अर्थ है कि बैंकों को अब रिज़र्व बैंक से कम ब्याज दर पर कर्ज मिलेगा। यह राहत आगे उपभोक्ताओं तक पहुँचती है – होम लोन सस्ते होते हैं, कारोबारी ऋणों पर बोझ घटता है, और उपभोग की गति तेज होने की उम्मीद बनती है। सतह पर देखा जाए तो यह कदम एक सकारात्मक संदेश लेकर आता है – खासकर ऐसे समय में जब महंगाई, बेरोजगारी और बाजार की अनिश्चितता से आम जनजीवन जूझ रहा हो। लेकिन क्या यह राहत वास्तव में टिकाऊ है? या फिर यह एक ऐसी झलक मात्र है जो आगे आने वाले आर्थिक अंधकार को कुछ क्षणों के लिए रोशन करती है? हर बार जब ब्याज दरें घटती हैं, बाजार में एक कृत्रिम उत्साह जन्म लेता है। उपभोक्ता कर्ज़ लेने को तैयार हो जाते हैं, व्यापारी निवेश के बारे में सोचते हैं, और रियल एस्टेट जैसे सुस्त पड़े क्षेत्र कुछ देर के लिए करवट लेते हैं। यह सब अच्छा लगता है – मगर यह केवल सतह की लहरें हैं। जड़ें वहीं की वहीं हैं।

जब तक अर्थव्यवस्था की नींव में मौजूद समस्याओं को हल नहीं किया जाएगा - जैसे बेरोजगारी, उत्पादन की लागत, कर व्यवस्था की जटिलता, और नीति-निर्माण की अनिश्चितता- तब तक यह सारी हलचल थोड़े समय की चहल-पहल बनकर रह जाएगी। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे किसी रोगी को दर्द से राहत देने के लिए एक तेज़ असर वाली दवा दी जाए- जबकि बीमारी अंदर गहराई में बढ़ रही हो। सैद्धांतिक रूप से तो बैंक रेपो रेट में कटौती के बाद तुरंत उपभोक्ता ऋण दरों में कमी करते हैं। लेकिन व्यवहार में यह प्रक्रिया इतनी सरल नहीं होती। अगर सस्ता ऋण केवल उपभोग को बढ़ाने में लग रहा है, और उत्पादन, नवाचार, व रोज़गार सृजन की दिशा में नहीं जा रहा- तो वह भी एक खोखला उत्सव है, जिसकी चमक जल्दी ही फीकी पड़ जाती है। रेपो रेट में कटौती एक ऐसा 'लुभावना सपना' है जिसमें उसे कुछ राहत की उम्मीद दिखती है, लेकिन वह जानता है कि वह सपना पूरी तरह उसका नहीं है। उसे डर है- कहीं यह नई राह उसे फिर एक ऐसे बोझ की ओर न ले जाए, जहां न तो आगे बढ़ना संभव हो और न ही पीछे लौटना।

समस्या ब्याज दरों से नहीं है। समस्या है - हमारी आर्थिक सोच से। हम हर बार एक ही इलाज को नए नाम से पेश करते हैं, और उम्मीद करते हैं कि नतीजा बदल जाएगा। सच्चाई यह है कि भारत को अब संरचनात्मक सुधारों की आवश्यकता है - जो गहराई में जाएँ, जो शिक्षा, रोजगार, कृषि, उद्योग, और न्याय व्यवस्था तक फैले हों। केवल सस्ती दरों पर ऋण उपलब्ध कराना समाधान नहीं, बल्कि सही दिशा में निवेश, पारदर्शी प्रणाली और दीर्घकालिक स्थिरता की ज़रूरत है। हर बार जब रेपो रेट में कटौती होती है, तो देश को थोड़ी साँस मिलती है- जैसे किसी बीमार को ऑक्सीजन मिल जाए। पर क्या हम इस राहत का सही उपयोग कर रहे हैं? या फिर हम हर बार उसी चक्रव्यूह की ओर लौट रहे हैं, जहाँ कुछ समय बाद फिर वही संकट खड़ा हो जाता है? यदि हम सचमुच एक विकासशील नहीं, बल्कि विकसित भारत की ओर बढ़ना चाहते हैं, तो हमें अस्थायी समाधानों से आगे बढ़कर जड़ों में बदलाव करना होगा। वरना हर बार यह राहत एक संजीवनी नहीं, बल्कि श्रापित चक्र की अगली कड़ी बनती रहेगी।

॥ मंदिरम् ॥

90

राजीव लोचन मंदिर, छत्तीसगढ़

राजीव लोचन मंदिर भारत के छत्तीसगढ़ राज्य के राजिम में स्थित एक मंदिर है। यह 8वीं शताब्दी का मंदिर है। मंदिर एक प्रांगण के मध्य में स्थित है, जिसके चारों कोनों पर चार सहायक मंदिर हैं। मंदिर में एक मंडप, एक अग्र-कक्ष और एक गर्भगृह है, जिसके गर्भगृह के ऊपर एक शिखर है। यह अपने विस्तृत नक्काशीदार द्वारों, स्तंभों और भित्ति स्तंभों के लिए प्रसिद्ध है, जिनमें विभिन्न हिंदू देवी-देवताओं और अन्य आकृतियों को दर्शाया गया है। यहां पूजे जाने वाले प्रमुख देवता विष्णु के चार भुजाओं वाले रूप हैं। यह मंदिर जगन्नाथ धाम की ओर जाने वाले मार्ग पर स्थित है, और हर साल हजारों तीर्थयात्री यहां आते हैं।

बोलेरो पलटी, 5 बहनों समेत 8 की मौत

- दमोह में जागेश्वर धाम के दर्शन कर जबलपुर लौट रहे थे; मोड़ पर खाई में गिरी गाड़ी
- मुख्यमंत्री ने जताया शोक, आर्थिक सहायता प्रदान के दिए निर्देश

दमोह (नप्र)। दमोह के बनवार चौकी क्षेत्र में महादेव घाट के पास बोलेरो अनियंत्रित होकर खाई में गिर गई। मंगलवार सुबह करीब 11 बजे हुए हादसे में एक ही परिवार के 8 लोगों की मौत हो गई। इनमें 5 बहनें शामिल हैं। 8 और 10 साल के दो बच्चों की भी जान गई है। पुलिस ने बताया कि जबलपुर जिले का परिवार बांदकपुर से जागेश्वर धाम के दर्शन करने के बाद लौट रहा था। बोलेरो में 15 लोग सवार थे। इनमें से 6 की मौके पर ही मौत हो गई जबकि दो बच्चों ने दमोह जिला अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। 5 अन्य घायलों को दमोह जिला अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद जबलपुर मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। उन्हें ग्रीन कॉरिडोर बनाकर दमोह से जबलपुर पहुंचाया गया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने हादसे पर दुख जताते हुए मृतकों के परिजन को 2-2 लाख जबकि घायलों को 50-50 हजार रुपए की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की है।

हादसे में इनकी गई जान

वैजयंती बाई (60)
लौंग बाई
हल्की बाई
संपत बाई
गुड्डी बाई
रचना
तमन्ना (10)
शिब्बू (8)
ये 5 लोग घायल
रज्जो सिंह (55)
वैभव सिंह (12)
रविंद्र (22)
आयुष
अंकित

मरने वालों में पांच सगी बहनें, भतीजी, नाती भी: पुलिस के मुताबिक, जबलपुर के भीटा फुलर गांव के परिवार के सदस्य जबलपुर के ही कटंगी स्थित राजघाट पौड़ी गांव में शादी समारोह में शामिल होने गए थे। वहां से बांदकपुर दर्शन करने पहुंचे। लौटते समय हादसा हो गया।

मरने वालों में पांच महिलाएं- लौंग बाई, हल्की बाई, संपत बाई, गुड्डी बाई और वैजयंती बाई लोधी बहनें थीं। वहीं, रचना उनके भाई कल्याण सिंह की बेटी थी। शिब्बू पिता हरि (8) गुड्डीबाई का नाती था।

शादी समारोह के बाद बांदकपुर गए थे: हादसे में घायल लोग जबलपुर जिले के अलग-अलग गांव के रहने वाले हैं। हादसे में घायल बोलेरो ड्राइवर अंकित लोधी भी इसी परिवार का हिस्सा है। वह राजघाट पौड़ी गांव का रहने वाला है। परिवार के सभी लोग अंकित की बहन की शादी में आए हुए थे। यही से बांदकपुर दर्शन करने गए थे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मृतकों के परिजन को 2-2 लाख, घायलों को 50-50 हजार रुपए की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की।

तेज स्पीड के कारण अनियंत्रित हुई बोलेरो : कलेक्टर

कलेक्टर सुधीर कोचर ने बताया कि महादेव घाट पर प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत एक पुल बना है। इस पुल के एप्रोच रोड पर आते ही बोलेरो अनियंत्रित होकर खाई में जा गिरी। प्रारंभिक अनुमान के मुताबिक, गाड़ी तेज स्पीड के कारण अनियंत्रित हुई।

एसपी ने कहा- यहां खतरनाक मोड़, स्ट्रक्चरल प्रॉब्लम

एसपी श्रुतिकीर्ति सोमवंशी ने कहा- प्राथमिक तौर पर सामने आया है कि जिस टर्न पर एक्सीडेंट हुआ, वह खतरनाक मोड़ है। कुछ स्ट्रक्चरल प्रॉब्लम भी हो सकती है। गाड़ी की स्पीड भी ज्यादा थी। सड़क पर पहियों के निशान मिले हैं। कमेटी मामले की जांच करेगी।

शादी की खुशियां मातम में बदलीं, दूल्हे की मौत

शादी में मिली बाइक की टक्कर, दुल्हन को घर छोड़कर तोहफा लेने गया था

शहडोल (नप्र)। शहडोल जिले में बारात लेकर लौटे दूल्हे की सड़क हादसे में मौत हो गई। वो दुल्हन को घर छोड़कर शादी में मिली बाइक से उसके लिए तोहफा लेने निकला था। लौटते वक्त रॉन्ग साइड से आ रही एक अन्य बाइक से टक्कर हो गई। हादसे में दीपेंद्र और दूसरी बाइक के चालक की मौके पर ही मौत हो गई। दूसरी बाइक पर पीछे बैठा व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हुआ है।

घर से दो किलोमीटर दूर हुई टक्कर: दीपेंद्र तोहफा लेकर लौट रहा था। घर से करीब दो किलोमीटर पहले सराई सांधा गांव के पास रॉन्ग साइड से आ रही एक अन्य बाइक से टक्कर हो गई। हादसे में दीपेंद्र और दूसरी बाइक के चालक की मौके पर ही मौत हो गई। दूसरी बाइक पर पीछे बैठा व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हुआ है।

खबर सुनते ही दुल्हन बेहोश हो गई: घर में दुल्हन पति का इंतजार कर रही थी। खबर मिलते ही घर का माहौल मातम में बदल गया। दुल्हन बार-बार बेहोश हो रही है। मंगलवार को ब्यौहारी अस्पताल में दोनों मृतकों का पोस्टमॉर्ट्म किया जा रहा है। दुल्हन अपने परिवार के साथ मौके पर मौजूद है। थाना प्रभारी अरुण पांडे ने बताया की पुलिस की ओर मार्ग कायम कर मामले कि जांच पड़ताल शुरू कर दी गई हैं। आज दोनों शवों का पोस्टमॉर्ट्म कराया जा रहा हैं। जिसके बाद शवों को परिजनों को सौंप दिया जाएगा।

यूपीएससी-2024 में एमपी की आयुषी बंसल की 7वीं रैंक

रीवा के रोमिल को 27वां, मंदसौर के ऋषभ को 28वां स्थान मिला

भोपाल (नप्र)। यूपीएससी ने सिविल सर्विस एग्जाम 2024 का फाइनल रिजल्ट मंगलवार को जारी किया। मध्य प्रदेश की आयुषी बंसल को 7वीं रैंक मिली है। इससे पहले आयुषी ने पीएससी-2023 में 97वीं और 2022 में 188वीं रैंक हासिल की थी।

आयुषी का जन्म ग्वालियर में हुआ है। माता-पिता दोनों एलआईसी में काम करते थे। आईआईटी की तैयारी के लिए वो दिल्ली आ गईं। यहां मैकेंजी एंड कंपनी में काम किया। 2022 में जॉब क्विट करके पीएससी, सीएसई प्रिपरेशन शुरू की।

वहीं, रीवा के रोमिल द्विवेदी को 27वीं रैंक मिली है। रोमिल सहकारिता विभाग के जॉइंट कमिश्नर केके द्विवेदी के बेटे हैं। पिछले साल इनका सिलेक्शन ऑल इंडिया रेलवे सर्विस में हुआ था। इसी तरह मंदसौर जिले के गरोठ के रहने वाले ऋषभ चौधरी ने 28 रैंक की हासिल की है। खास बात ये है कि ऋषभ ने बिना कोचिंग के ही ये मुकाम पाया है। वहीं, इटारसी के गरीबी लाइन निवासी मोनू शर्मा ने 359वी रैंक हासिल की है। भोपाल के क्षितिज आदित्य शर्मा को 58वां स्थान मिला है। इसी तरह इंदौर के योगेश राजपूत को रिजल्ट में 540वीं रैंक मिली है।

भितरवार की दिव्यांशी अग्रवाल को 249वीं रैंक

पापा कभी-कभी कहते थे कि काश मेरा कोई बच्चा आईएएस या आईपीएस होता। तभी मैंने सोच लिया था कि मुझे आईएएस बनना है। ये कहना है भितरवार की दिव्यांशी अग्रवाल का, जिनका चयन यूपीएससी में हुआ है। दिव्यांशी अग्रवाल को 249 वी रैंक मिली है। दिव्यांशी ने कहा कि मैंने सेल्फ स्टडी की और एक साल की तैयारी में यूपीएससी क्लियर हो गया। दिव्यांशी बताती हैं कि मेरे पापा नरेंद्र कुमार अग्रवाल की किराने की दुकान है। मां रश्मि अग्रवाल हाउस वाइफ हैं। पापा को मैंने बचपन से कड़ी मेहनत करते देखा है। वही हार्डवर्क करने की आदत मेरी भी है।

आगर के आयुष जैन को 344वीं रैंक

आगर के आयुष जैन ने यूपीपीएससी परीक्षा 2024 में 344वीं रैंक हासिल की है। उन्होंने कहा कि पहले तो यूपीएससी के नाम से ही डर लगता था। लगता था कि ये मेरे बस की बात नहीं है। लेकिन फिर मैंने इसके बारे में गहराई से जानकारी ली। समझा कि किन विषयों पर पकड़ बनानी होगी। तब पता चला कि जिन विषयों में मुझे पहले से रुचि थी, वही इस परीक्षा के लिए सबसे अहम हैं। जैसे कि इतिहास और आर्ट्स स्ट्रीम के अन्य सब्जेक्ट। यह आयुष का तीसरा प्रयास था।

शिवपुरी जिले के दो युवाओं का पीएससी में चयन

शिवपुरी जिले की दो युवा प्रतिभाओं ने पीएससी 2024 में सफलता पाई है। करैरा के व्यापारी सतीष कुमार नौगरेया की बेटी कृतिका नौगरेया (डॉल) ने 400वीं रैंक हासिल की है।

हिम्मतगढ़ के नीतेश धाकड़ को 719वीं रैंक: शिवपुरी जिले के हिम्मतगढ़ गांव के किसान परिवार से ताल्लुक रखने वाले नीतेश धाकड़ ने 719वां स्थान पाया है। नीतेश की इस सफलता से ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को नई प्रेरणा मिली है।

आयुषी बोलीं- ऑनलाइन कोचिंग का मिला फायदा

ग्वालियर के विनय नगर की आयुषी बंसल ने मीडिया को बताया कि उनकी मां एलआईसी में एपजीए हैं। 10वीं ग्वालियर से की थी। इसके बाद 12वीं दिल्ली से की। इसके बाद इंजीनियरिंग आईआईटी कानपुर से की। इंजीनियरिंग करने के बाद आयुषी ने 10 महीने तक प्राइवेट सेक्टर में जॉब किया। इसके बाद मैंने ठान लिया था कि यूपीएससी फाइट करूंगी और अच्छी प्रशासनिक अधिकारी बनूंगी। इसके लिए मैंने ऑनलाइन कोचिंग जॉइन की थी, जिससे मुझे काफी फायदा हुआ था। पहले प्रयास में ही मैं सिलेक्ट हुई थी और आईपीएस बनी और कर्नाटक कैडर मिला। इसके बाद लगातार ऑनलाइन पढ़ाई जारी रखी। इस बार फिर यूपीएससी की परीक्षा दी। पिछले साल यूपीएससी के फाइनल रिजल्ट में 97 रैंक मिली थी। इस बार की सफलता से सभी खुश हैं।

इटारसी के मोनू शर्मा को 359वीं रैंक

नर्मदापुरम जिले के इटारसी निवासी मोनू शर्मा ने यूपीएससी में 359वीं रैंक हासिल की है। मोनू ने ये सफलता चौथे प्रयास में पाई है। पिता प्राइवेट जॉब करते हैं और मां गृहिणी हैं। मोनू शर्मा ने बताया कि उन्होंने संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में सेल्फ स्टडी करके सफलता हासिल की है। लक्ष्य आईएएस का था, लेकिन जो रैंक आई है, उससे आईपीएस मिल जाएगा। मोनू से छोटी दो बहनें और हैं। छोटी बहन रोणिका भी एमपीपीएससी की तैयारी कर रही हैं।

प्रदेश के सीधी में तापमान 44 डिग्री पार

इंदौर, रीवा, ग्वालियर-चंबल संभाग में लू का अलर्ट ; भोपाल-उज्जैन भी तपेंगे

भोपाल (नप्र)। इन दिनों मध्यप्रदेश का पूर्वी हिस्सा यानी, सीधी, सतना, टीकमगढ़, छतरपुर, सिंगरौली सबसे गर्म है। लगातार दूसरे दिन सीधी में पारा 44 डिग्री के पार रहा। वहीं, 27 शहरों में पारा 40 डिग्री या इससे अधिक रहा। मंगलवार को भी प्रदेश में तेज गर्मी थी। मौसम विभाग के अनुसार, इंदौर, रीवा, ग्वालियर और चंबल संभाग के 9 जिलों में लू चल सकती है। इनमें अलीराजपुर, बड़वानी, शिवपुरी, भिंड, दतिया, निवाड़ी, टीकमगढ़ सीधी और सिंगरौली शामिल हैं। भोपाल, उज्जैन, सागर और जबलपुर संभाग में भी गर्मी का असर रहेगा। यहां भी लू जैसे हालात ही रहेंगे। इससे पहले सोमवार को पूरा प्रदेश तप गया। गर्म हवाएं चलने की वजह से सीधी में पारा 44.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। एक दिन पहले रविवार को यहां तापमान 44 डिग्री दर्ज किया गया था। सीधी के बाद सतना और टीकमगढ़ में सबसे ज्यादा गर्मी रही। सतना में 43.6 डिग्री, टीकमगढ़ में 43.5 डिग्री, नौगांव में 43.2 डिग्री, रीवा में 43 डिग्री दर्ज किया गया। दमोह, मंडला, शिवपुरी, उमरिया, मलाजखंड, सागर, खरगोन, खजुराहो, सिवनी, नरसिंहपुर, गुना, रतलाम, नर्मदापुरम, रायसेन, खंडवा, बैतूल, धार और छिंदवाड़ा में भी तेज गर्मी रही। बड़े शहरों की बात करें तो ग्वालियर में पारा सबसे ज्यादा 41.9 डिग्री दर्ज किया गया। जबलपुर में 40.7 डिग्री, भोपाल में 40.1 डिग्री, उज्जैन में 40 डिग्री और इंदौर में पारा 39.6 डिग्री रहा।

पारे में बढ़ोतरी का दौर रहेगा

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया कि अगले कुछ दिनों तक गर्मी का असर तेज रहेगा। मंगलवार को लू का अलर्ट भी है।

सीईओ तबादला सूची जारी, 35 जनपद में सर्जरी

भोपाल-जबलपुर-ग्वालियर से 22 अफसर हटे, मैदानी जिलों में भेजा

भोपाल (नप्र)। मप्र के पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग ने 35 जनपद पंचायत सीईओ (मुख्य कार्यपालन अधिकारी) के तबादले किए हैं। इनमें से 22 अधिकारी ऐसे हैं जो भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, सागर जैसे बड़े शहरों में पदस्थ थे। इन्हें अब मैदानी जिलों में भेजा गया है।

इन अफसरों की बड़े शहरों से रवानगी

रंजीत सिंह रघुवंशी (विकास आयुक्त कार्यालय भोपाल) जीरापुर, राजगढ़
केके रैकवार (पंचायत राज संचालनालय भोपाल) जैतहरी, अनूपपुर
हेमेन्द्र सिंह चौहान (संभागीय आयुक्त कार्यालय इंदौर) धरमपुरी, धार
वंदना गंगल (क्षे.ग्रा.वि एवं पंचा. राज प्रशिक्षण केन्द्र ग्वालियर) रौन, भिण्ड
उदय प्रताप सिंह भदौरिया (राज्य आजीविका मिशन जबलपुर) बिरसा, बालाघाट
प्रतिमा उईके (महात्मा गांधी रा.ग्रा.वि एवं पंचा राज संस्थान जबलपुर) मंडला
शिवानी जैन (महात्मा गांधी रा.ग्रा.वि. एवं पंचा राज संस्थान जबलपुर) जयसिंह नगर, शहडोल
अभिषेक गुप्ता (पंचा. राज संचालनालय भोपाल) बाबई चिचली, नरसिंहपुर
राजीव लघाटे (महात्मा गांधी रा.ग्रा.वि. एवं पंचा राज संस्थान जबलपुर) बुढ़ार, शहडोल
रानू जैन (संभागीय आयुक्त कार्यालय सागर) सोहावल, सतना
आयुषी गोयल (क्षे.ग्रा.वि. एवं पंचा राज प्रशिक्षण केन्द्र भोपाल) मनासा,नीमच
दिव्या त्रिपाठी (संभागीय आयुक्त कार्यालय रीवा) सोहागपुर, शहडोल
तपस्या जैन (विकास आयुक्त कार्यालय भोपाल) गंजबासौदा, विदिशा
मोना सक्सेना (क्षे.ग्रा.वि. एवं पंचा. राज प्रशिक्षण केन्द्र भोपाल) निवाली, बड़वानी
विशाल सोनी (विकास आयुक्त कार्यालय भोपाल) साईंखेड़ा, नरसिंहपुर
ईश्वर सिंह वर्मा (पंचायत राज संचालनालय भोपाल) बड़ामलहरा, छतरपुर
पूजा गुप्ता (विकास आयुक्त कार्यालय भोपाल) आलोट, रतलाम
ममता मिश्रा (संभागीय आयुक्त कार्यालय शहडोल) कोतमा, अनूपपुर
दीपा कोटस्थाने (क्षे.ग्रा.वि. एवं पंचा राज प्रशिक्षण केन्द्र उज्जैन) गौरिहार, छतरपुर
आशा देवी पटले (क्षे.ग्रा.वि एवं पंचा राज प्रशिक्षण केन्द्र जबलपुर) सिहोरा, जबलपुर
रोहित पचौरी (क्षेग्रावि एवं पंचा राज प्रशिक्षण केन्द्र इंदौर) उमरबन, धार
प्रवीण बंसोड (विकास आयुक्त कार्यालय भोपाल) त्योंथर, रीवा

विधानसभा में उठा था सीईओ के खाली पदों का मुद्दा

89 जनपद पंचायत में लंबे समय से सीईओ के पद रिक्त थे यह मामला विधानसभा में उठा था और इसके बाद सरकार ने अब कुछ जनपदों में सीईओ की पोस्टिंग की है।